निबंध संग्रह

निबंध लेखन- परिचय

निबंध-लेखन कला

गद्य की विधाओं में निबंध-रचना एक मुख्य विधा है। निबंध गद्य-रचना का उत्कृष्ट उदाहरण है। अनुभव तथा ज्ञान का कोई भी क्षेत्र निबंध का विषय बन सकता है। जैसे- गणतंत्र दिवस,
15 अगस्त, होली, दिपावली, मेरा प्रिय कवि आदि।

निबंध लिखने के लिए लेखक के विषय का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है। विषय के प्रति अपने ज्ञान को प्रस्तुत करने के लिए निबंध की भाषा का प्रभावशाली होना अत्यंत आवश्यक है। अच्छे निबंध के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है –

1. निबंध के द्वारा लेखक अपने विचारों को ठीक से प्रस्तुत करता है।

2. इसमें स्पष्टता और सजीवता होनी चाहिए।

3. भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण होती है, साथ ही फैलाव के लिए मुहावरों, लोकोक्तियों व उदाहरणों का प्रयोग किया जाता है।

4. इसमें भूमिका व निष्कर्ष देना ज़रूरी है।

निबंध के अंग

निबंध के मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन अंग होते हैं –

1. प्रस्तावना (भूमिका) – प्रस्तावना या भूमिका निबंध के प्रति पाठक के मन में रूचि पैदा करती है। यह अधिक लंबी नहीं होनी चाहिए।

2. विषयवस्तु (विवेचना) – यह निबंध का प्रमुख अंग है। इसमें विषय संबंधी बातों पर चर्चा की जाती है।

3. उपसंहार – यह निबंध का अंतिम अंग है। इसमें निबंध में कही गई बातों को सार-रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

आतंकवाद: एक चुनौती

'आतंकवाद' का नाम सुनते ही मन में दहशत जाग उठती है। समय बदल रहा है। लोगों की सोच बदल रही है परन्तु कुछ असामाजिक तत्वों की सोच वहीं की वहीं अटकी हुई है। आज यह विश्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। आतंकवाद किसी भी देश की आर्थिक व्यवस्था और उसकी सुरक्षा पर एक सवालिए निशान की

भांति है। पहले इसका स्तर छोटे-छोटे भू-भागों के लिए लड़ने वाले वर्गों तक सीमित था। परन्तु अब यह समस्त विश्व में भंयकर बीमारी की तरह उभर रहा है।

आतंकवाद का भयानक रूप हिंसा है। आज इस आतंकवाद नाम की बीमारी को राजनिति में भी भुनाया जाता है। एक गंदी राजनीति और भयंकर अपराधियों के परस्पर संयोग से आतंकवाद नाम की बीमारी उत्पन्न होती है। यह लोकतंत्र का सम्मान नहीं करता। यह तो गोली के आधार पर शासन करने में विश्वास रखता है। स्वतंत्रता के नाम पर और अपनी नाजायज़ मांगों को रक्त बहाकर मनवाने में विश्वास रखता है। इसके लिए दया, ममता और अहिंसा जैसे शब्द खोखले हैं।

आज आतंकवाद के जरिए सरकार पर दबाव डालकर अपने पक्ष को मज़बूत और दृढ़ रखने का प्रयासकिया जाता है। ऐसे तत्वों को आर्थिक सहायता देने वालो की कमी नहीं है। वे लोग इनके द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति करते हैं और ऐसे तत्वों को बढ़ावा देते हैं। ये लोग सीधे तौर पर सामने नहीं आते हैं बल्कि पीछे से रहकर इनको मज़बूत बनाते हैं। ये नागिरकों पर आतंक पैदा करके देश को खोखला बनाने का प्रयास करते हैं। इनको रोकने के लिए सरकार को भी जवाबी हिंसा के लिए विवश होना पड़ता है।

लोकतंत्र की नींव के लिए यह सबसे बड़ा खतरा है। आतंकवाद की इस बीमारी से आम जनता को त्रस्त होना पड़ता है। आतंकवादी यह जानते हैं कि सरकार को झुकाना है, तो आम जनता में हिंसा के माध्यम से भय फैलाकर किया जा सकता है। इससे आम जनता को जो मानसिक, शारीरिक और आर्थिक कष्ट सहन करना पड़ता है, उन्हें उनसे कोई सरोकार नहीं है। यह एक मनोवैज्ञानिक खेल है, इसमें कुछ को मारकर हज़ारों में डर पैदा करने का प्रयास किया जाता है। यह कार्य भी करता है।

आतंकवाद आंतरिक विद्रोह से जन्म लेता है। जब यह देश से बाहर व्यापक स्तर पर फैल जाता है, तो आतंकवाद का रूप धारण कर लेता है। अलकायदा और तालिबान गुट इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं। भारत में कई वर्षों से आतंकवादी गतिविधियों में बढ़ोतरी हुई है। कश्मीर घाटी आज तक इस आग में जल रही है। इस आग की लपटें दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों तक भी पहुँच गई हैं। हमारे देश में आतंकवाद लोकतंत्र की एकता और अखंडता के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

यह आंतकवाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहुँच बना चुका है। भारत, अफ़गानिस्तान, अमेरिका और रूस जैसे देशों में इसका तांडव आए दिन देखने को मिल जाता है। भारत में मुंबई शहर के ताजहोटल में और अमेरिका में वल्ड ट्रेड सेन्टर में हुए आंतकवादी हमले सबसे बड़े हमले थे। इंसानियत को समाप्त कर हिंसा का ऐसा वीभत्स रूप देखते ही लोगों के ह्दय काँप गए।

हमें चाहिए कि इन हमलों से डरने के स्थान पर संयम से काम लें। अपनी देश की एकता और अखण्डता को बनाएँ रखें। सभी धर्म के लोग आपस में मिल-जुलकर रहें। असामजिक तत्वों से सावधान रहें। आतंकवाद देश में उथल-पुथल मचा सकता है लेकिन यदि हम एक होकर इनका सामना करेंगे, तो यह तत्व हमारा और हमारे देश का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

हम यह भुल जाते हैं कि हिंसा करने वाले को हिंसा ही मिलती है। बुरे का अंत बुरा ही होता है। लादेन की दर्दनाक मृत्यु इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

गुलाम भारत में आपकी भूमिका

स्वाधीनता हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसको पाने के लिए यदि मनुष्य को लड़ना भी पड़े, तो सदैव तत्पर रहना चाहिए। पराधीनता वो अभिशाप है, जो मनुष्य के आचार-व्यवहार, उसके परिवेश, समाज, मातृभूमि और देश को गुलाम बना देते हैं। गुलामी फिर चाहे कैसी भी हो, गुलामी ही होती है।

भारत ने बहुत लंबे समय से गुलामी के अभिशाप को सहा है। पहले वो मुगलों के अधीन रहा। उनके द्वारा उसने अनेक अत्याचार सहे परन्तु उसकी नींव नहीं हिली। इसका मुख्य कारण था 'मुगल' पहले आए, तो लूटमार के मकसद से थे परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने यहाँ रहना स्वीकार कर इस पर राज किया। यदि मुगलकाल के कुछ शासकों को अनदेखा कर दिया जाए, तो बाकि मुस्लिम शासकों ने यहाँ की धन-संपदा का शोषण नहीं किया।

मुगलकाल के समाप्त होते-होते अंग्रेज़ों ने यहाँ अपने पैर पसारने शुरु किए। पहले-पहल उन्होंने इसे व्यापार के लिए चुना परन्तु उनका उद्देश्य बहुत बाद में समझ में आया। व्यापार करते हुए उन्होंने पूरे भारत को अपने हाथों में समेटना शुरु कर दिया। उनका उद्देश्य यहाँ की अतुल धन-संपदा का शोषण कर उसे अपने देश पहुँचाने का था। उन्होंने ऐसा किया भी। भारत का विकास व उन्नति उनका उद्देश्य कभी था ही नहीं।

भारत के लोगों को जब स्थिति समझ में आई, तब तक बात हाथ से निकल चुकी थी। पूरा भारत गुलामी की बेड़ियों में बंध चुका था। यहाँ के लोग उनके शोषण से पीड़ित होने लगे थे। उन्होंने यहाँ कि धन-संपदा, संस्कृति, धरोहर पर अतुल्य वार किए, जिसकी छाप आज भी देखी जा सकती है। हम भारतीयों को पराधीनता की बेड़ियाँ तोड़ने में आधा दशक लग गया। लोगों ने स्वतंत्रता का मूल्य पहचानना शुरु किया और अंग्रेज़ों द्वारा भयंकर यातनाएँ सही। अनेक देशभक्तों ने काल कोठरियों में अपना जीवन व्यतीत किया। कई वीरों ने तो हँसते-हँसते अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। अंतत: भारत ने इन बेड़ियों से आज़ादी प्राप्त की।

यदि मैं आज़ाद देश का नागरिक न होकर गुलाम देश का नागरिक होता, तो अंग्रेज़ों के अत्याचार व दमन का मुँह तोड़ जवाब देता। उनके दमन को रोकने के लिए हड़तालें करवाता, अंग्रेज़ विरोधी सभाओं में भाग लेता व दूसरों को भी आज़ादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए उत्साहित करता। अंग्रेज़ी सामान का बहिष्कार करता और खादी वस्त्र अपनाता।

भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद की भाँति अपने प्राणों का बलिदान देते हुए ज़रा भी नहीं हिचकता। सुभाषचन्द्र बोस द्वारा निर्मित आज़ाद हिंद फौज़ में शामिल हो भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अहम भूमिका निभाता। गाँधीजी द्वारा चलाए सारे आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाता। असहयोग आंदोलन में उनके कंधे से कंधा मिलाकर चलता।

अंग्रेज़ों के आगे अपने घुटने नहीं टेकता। निस्वार्थ भाव से आज़ादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देता। अपना तन-मन-धन अपने देश को अर्पण कर मैं भी अपना नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिख देता। मेरे देश के प्रति मेरे जो कर्त्तव्य होते, उन्हें में अपनी सहभागिता द्वारा पूरा करके जाता। यह सब कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता। गुलाम भारत में मेरी यही भूमिका होती।

चिट्ठियों का अनूठा संसार

चिट्ठियों के माध्यम से हम मन के भावों को एक पन्ने में उतारकर उस पन्ने को एक लिफाफे में डाल देते हैं और डाक-टिकट लगाकर निश्चित पते पर भेज देते हैं। ये बिना बोले अपना कार्य पूरी ईमानदारी से निभातीं हैं। ये हज़ारों वर्षों से हमारे अपनों की जानकारियाँ लाती रहीं हैं। ये स्वयं में एक अनूठा संसार है।

हमारे जीवन में चिट्ठियाँ विशेष महत्व रखती हैं। हज़ारों मील की दूरियाँ चिट्ठियों के माध्यम से सिमट कर रह जाती हैं। इसका स्वरूप समय के अनुसार बदलता रहा है। पहले के समय में संदेशवाहक; जैसे- घुड़सवार या हरकारों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश भेजा जाता था। परन्तु उस समय यह बहुत कठिन कार्य था। अपने रिश्तेदारों की कुशलक्षेम महीनों बाद प्राप्त होती थीं।

मनुष्य ने कबूतरों द्वारा पत्र-व्यवहार का प्रयास भी किया था। कबूतर के पैरों में छोटे-छोटे संदेश बांध दिए जाते थे। इनका प्रयोग राजाओं द्वारा युद्ध में या राजाओं के गुप्तचर विशेष परिस्थितियों में ही करते थे। यातायात के साधनों में हुए बदलावों ने इस दिशा में नई क्रांति को जन्म दिया।

उसके बाद तो जैसे दुनिया ही बदल गई। चिट्ठियाँ वाहनों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान में भेजी जाने लगीं। ये स्थान डाकघर कहलाते हैं। चिट्ठियाँ बांटने वाले को डाकिया कहते हैं। डाकियों का कार्य होता है, इन डाकघरों से चिट्ठियाँ लेकर उनके सही गंतव्य स्थान पर पहुँचाना। यह कार्य बहुत कठिन होता है। कई ऐसे स्थान हैं, जहाँ पर सुगमता से नहीं पहुँचा जा सकता है।

ऐसे में उन चिट्ठियों को सही स्थान पर पहुँचना हिम्मत का कार्य है। अंतरदेशीय पत्र और पोस्टकार्ड के माध्यम से संदेश सरलतापूर्वक अपनों को मिलने लगे। अब इससे भी आधुनिक साधन; जैसे- स्पीड पोस्ट, कुरियर आदि के द्वारा संदेश शीघ्रता से भेजे जाने लगे हैं। विज्ञान के आविष्कारों ने इसको और भी सरल और सुगम बना दिया है।

विज्ञान ने कंप्यूटर और इंटरनेट का आविष्कार कर दुनिया को मानो छोटा कर दिया है। अब आप हज़ारों मील दूर रहने वाले अपने सगे-संबंधियों से घर बैठे ही बातचीत कर सकते हैं या संदेश लिखकर दे सकते हैं। बस आपके पास कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा होनी चाहिए। इसके द्वारा आपको लगेगा ही नहीं कि आपके अपने आपके पास नहीं हैं। आज चिट्ठियों का स्वरूप पन्नों से निकलकर ई-मेल और एस.एम.एस. का रूप धारण कर चुका है।

युग बदल जाएँ, इनका स्वरूप बदल जाए परन्तु चिट्ठियों की दुनिया हमेशा से निराली और प्यारी रही हैं। चिट्ठियों का चाहे रूप बदलता रहा हो परन्तु इनकी विशेषता और महत्व में कभी कमी नहीं आई है। चिट्ठियाँ चाहे पहले कागज़ पर लिखी जाती थीं और आज कंप्यूटर पर लिखी जाती हैं लेकिन पढ़ने वाले को वह आज भी भावुक कर देती हैं। जब तक की मनुष्य में आपसी प्रेम की भावना विद्यमान रहेगी, तब तक चिट्ठियों का अस्तित्व जीवित रहेगा।

ये स्नेहिल भावनाओं और आशीर्वाद से भरा पन्ना है, जिसकी विशेषता पर कोई प्रश्न-चिह्न नहीं लगा सकता है। ये चाहे माँ अपने पुत्र को भेजे, पिता अपने बेटे को भेजे, पत्नी अपने पति को भेजे, बच्चे अपने दादा-दादी या नाना-नानी को भेजें, इनका स्वरूप सुंदर और मन को भाव-विभोर करने वाला होता है। इनके माध्यम

से रिश्तों की डोर दूर होते हुए भी आपस में जुड़ी हुई हैं। यह दूर रहने वाले की आस है। ये एक आशा है कुशल-क्षेम जानने की।

छात्र और शिक्षक

छात्र जब शिक्षा-संस्थान या विद्यालय में अध्ययन करता है, तो वह विद्यार्थी या छात्र कहलाता है। अध्ययन, चिंतन और मनन द्वारा विद्या अर्जित करना विद्यार्थी का दायित्व है। इस दायित्व को पूरा करने में शिक्षक का बहुत बड़ा हाथ होता है। एक बच्चे को शिक्षा देकर उसका मार्गदर्शन करना शिक्षक का कार्य होता है। शिक्षक ही छात्र को सही दिशा दिखाता है। ये दोनों शिक्षा रूपी धागे से आपस में जुड़े होते हैं।

एक बच्चा परिवार से कुछ सीखने के बाद गली-मोहल्ले के वातावरण में साँस लेता है। उसके बाद वह विद्यालय के आँगन में जाता है, जहाँ वह शिक्षक की छत्र-छाया में आता है। एक अच्छे शिक्षक का यही प्रयास रहता है कि उसका छात्र अनुशासित, चरित्रवान, बुद्धिमान और परिश्रमी बने। एक शिक्षक का व्यक्तित्व साधारण नहीं होता। उसके कंधों पर पूरे देश का भार होता है।

यदि विद्यार्थी अच्छे होंगे, तो देश का भविष्य भी अच्छा होगा। शिक्षक केवल पुस्तकों का ज्ञान ही नहीं देता वरन व्यक्तित्व का निर्माण भी करता है। छात्रों को सत्कार्य करने की प्रेरणा देता है। एक अच्छा शिक्षक एक कारीगर के समान होता है, जो कोयले की खान से निकले पत्थर जैसे छात्र को तराशकर मूल्यवान हीरा बना देता है।

शिक्षक अपने विद्यार्थी के गुणों को समाज के सामने रखता है। अर्थात साधारण से छात्र को भी परिश्रमी, बुद्धिमान व योग्य बना देता है। उसी तरह एक छात्र का कर्त्तव्य होता है कि वह अपने शिक्षक की बातों को ध्यान से सुने, उनकी आज्ञा का पालन करे, विद्यालय के अनुशासन को बनाए रखे, कक्षा में पढ़ाए पाठ को दुबारा पढ़े साथ ही ज्ञान को बढ़ाने वाली अन्य पुस्तकों का भी अध्यनन करे। शिक्षक का मान-सम्मान करे।

शिक्षक के लिए आवश्यक है कि छात्र के साथ सहयोग बनाए रखे। पाठ को रुचिकर बनाए ताकि छात्र पूरी तरह उसमें रुचि ले सकें। उनसे मित्रता कायम करे। उनको अपना भरपूर सहयोग दे। हर कदम पर उन्हें संभाले। विद्यार्थियों से स्नेह करें। उनकी समस्याओं और कठिनाईयों को हल करने में उनकी सहायता करे।

आजकल शिक्षकों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है। कक्षा में ज्यादातर उपस्थित नहीं रहते हैं। ज़्यादा पैसे लेकर ट्यूशन पढ़ाते हैं और छात्रों को ऐसा करने के लिए मजबूर करते हैं। अत: आज की आवश्यकता यही है कि छात्रों में अराजकता व अनुशासनहीनता रोकने के लिए छात्र और शिक्षक दोनों ही अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन ठीक से करें ताकि उनके संबंध अच्छे बने रहें। छात्र जो आजकल शिक्षकों का आदर करना भूल गए हैं, वे उन्हें पूरा मान-सम्मान दें।

इसके लिए शिक्षक को चाहिए कि वे वाणी से मधुर बोलें तथा व्यवहार में शिष्टता बनाए रखें। शिक्षक, विद्यार्थियों की 'आत्मशक्ति' को पहचाने में सक्षम होना चाहिए। अत: यह सब तभी संभव है, जब विद्यालय में गुरुकुल जैसा शांत वातावरण हो, स्वाभिमानी, तेजस्वी व तपस्वी शिक्षक हो और राजनीति से शिक्षा दूर हो।

जनसंख्या वृद्धि और उससे उत्पन्न चुनौतियाँ

भारत में जनसंख्या वृद्धि बहुत बड़ी समस्या बनकर उभर रही है। आज जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि मनुष्य के लिए समस्याओं और कठिनाईयों का ढेर ला रही है। जनसंख्या वृद्धि दर में भारत आज सर्वोच्च स्थान पर है। किसी समय यह स्थान चीन को प्राप्त था। चीन की सरकार के अथक प्रयासों ने वृद्धि दर पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया है। परन्तु भारत इस वृद्धि में अपना नियंत्रण नहीं कर पाया है, इसका परिणाम यह है कि उसकी आबादी 100 करोड़ से भी अधिक हो गई है।

जनसंख्या वृद्धि समस्या कैसे हो सकती है? ऐसा प्रश्न कई लोगों के मन में आता है। यह ऐसी समस्या है, जिससे अकेले ही अनेक समस्याएँ पैदा होती हैं। जनसंख्या वृद्धि समस्या इसलिए है क्योंकि जब किसी देश की जनसंख्या वृद्धि की दर में बढ़ोतरी होती है, तो वहाँ के नागरिकों के लिए अधिक आवासीय स्थलों की आवश्यकता बढ़ जाती है। आवासीय स्थलों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए भूमि की आवश्यकता होती है और उसके लिए वनों को काटना पड़ता है।

कृषि योग्य भूमि भी आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयोग की जाती हैं। इससे कृषि उत्पादन में दबाव पड़ता है। खाद्य संबंधी आवश्यकताओं में कमी आती है। देश की खाद्य-आपूर्ति को पूरा करने के लिए अन्य देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। इसके लिए देश के पैसों को बाहर भेजना पड़ता है। इससे देश की आर्थिक व्यवस्था पर भी दबाव पड़ता है।

जनसंख्या जितनी बढ़ेगी उसकी आवश्यकताओं में उतनी ही वृद्धि होगी। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधनों की आवश्यकताएँ अधिक बढ़ जाएँगी। देश यदि इन आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं होगा, तो स्थिति और भी खराब हो जाएगी। खाद्य आपूर्ति के साथ-साथ कपड़ा, पानी, बिजली, ईंधन, आवास आदि साधनों की आवश्यकता होगी। इन आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए प्रकृति का दोहन अधिक किया जाएगा। पर्यावरण और वातावरण पर भी अतिरिक्त दबाब बन जाएगा।

अधिक जनसंख्या के कारण उन्हें मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। देश की ज्यादातर आबादी ऐसी है, जिन्हें कई प्रकार की सुविधाओं से वचिंत रहना पड़ता है। शिक्षा, बिजली, पानी और चिकित्सा जैसी सुविधाएँ पूरे देश में समान रूप से नहीं मिल पाती हैं। आज भी देश में ऐसे स्थान हैं, जहाँ अच्छे विद्यालयों और चिकित्सालयों की कमी है। इस तरह से देश की प्रगति संभव नहीं है। शिक्षा ऐसा साधन है, जो व्यक्ति, समाज और देश का समुचित विकास करने में सक्षम है। यदि व्यक्ति शिक्षित है, तो उसमें स्वत: जागरूकता आ जाती है। परन्तु यदि शिक्षा ही सबको समान रूप से नहीं मिल पा रही है, तो देश को क्या विकास मिलेगा।

अशिक्षित व्यक्ति मज़दूरी करने के लिए और गरीबी का जीवन जीने के लिए बाध्य हो जाता है। सरकार द्वारा अधिक आबादी के लिए रोज़गार उपलब्ध करवाना कठिन हो जाता है। इस तरह से देश में बेरोज़गारी की समस्या भी मुँह फाड़े खड़ी हो जाती है। गरीबी के कारण लोग अपराध करने के लिए बाध्य हो जाते हैं। इस तरह देश में अव्यवस्था फैलती है। देश पर भी आर्थिक बोझ बढ़ता है। असंतोष बढ़ने के कारण देश कमज़ोर हो जाता है।

इन सभी बातों पर विचार करने से यह ज्ञात होता है कि जनसंख्या वृद्धि देश के विकास के लिए उचित नहीं है। हमें यह समझना होगा कि परिवार जितना छोटा होगा उसकी आवश्यकताओं को पूरा करना उतना ही सुविधापूर्ण होगा। इससे हम अपने परिवार को सुखी बना पाएगें। उन्हें हर सुख-सुविधा दे पाएगें।

सरकार भी अब इस तरफ़ महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। हमें भी उसके साथ कदम से कदम मिलना होगा। परिवार-नियोजन को अपनाना होगा। इस तरह हम अपना और अपने देश का विकास कर सकते हैं और जनसंख्या वृद्धि पर काबू पा सकते हैं।

जीवन को प्रभावित करने वाला व्यक्ति

हमारा इतिहास ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों से भरा पड़ा है, जिन्होंने हमें प्रभावित किया हो। ऐसे बहुत से नाम हैं; जैसे- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, महात्मा गाँधी इत्यादि। ये हमारी प्रेरणा होते हैं। परन्तु झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई से मैं बहुत प्रभावित हूँ। वह एक ऐसी नारी थी, जिन्होंने स्त्री होकर अंग्रेज़ों को लोहे के चने चबवा दिए।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का जन्म वाराणसी के 'भदैनी' नामक स्थान पर 19 नवंबर, 1828 में हुआ था। इनका विवाह से पूर्व का नाम 'मणिकर्णिका' था। इनके पिता का नाम 'मोरोपंत तांबे' था और माताजी का नाम 'भागीरथी बाई' था। मोरोपंत जी मराठा पेशवा 'बाजीराब' के पास उनके दरबार में कार्यरत थे। रानी के बचपन का नाम 'मनु' था। जब इनकी माता का देहांत हुआ, तब वह बहुत छोटी थीं।

इनकी अल्पायु जानकर पिता इन्हें बाजीराव के दरबार में ले जाने को विवश हो गए। इन्होंने बाजीराव को अपनी प्यारी बातों से मंत्रमुग्ध कर दिया था। बाजीराव पेशवा ही इन्हें प्यार से 'छबीली' कहते थे। झाँसी की रानी अन्य लड़कियों से सर्वथा भिन्न थीं।उन्हें लड़कियों द्वारा खेले जाने वाले खेल नहीं सुहाते थे। बचपन से ही इन्हें तलवारबाज़ी, घुड़सवारी, निशानेबाज़ी और सैनिकों संबंधी खेल खेलने में बड़ा आनंद आता था। सन 1842 में इनका विवाह झाँसी के राजा 'गंगाधर राव निवालकर' के साथ हुआ।

'मराठी विवाह' की एक परपंरा के अनुसार विवाह के समय कन्या का नया नाम रखा जाता है। तभी से ये झाँसी की रानी 'लक्ष्मीबाई' कहलाईं। झाँसी की रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया था, जो 4 महीने की अल्पायु में चल बसा। गंगाधर राव का स्वास्थ्य भी धीरे-धीरे बिगड़ता चला गया। राजा की गिरती दशा को देखते हुए सभी को झाँसी के भविष्य की चिन्ता होने लगी। गंगाधर स्वयं इस बात से चिन्तित थे कि उनके पश्चात झाँसी का क्या होगा? सबकी सलाह पर उन्होंने एक पुत्र को गोद लिया, जिसका नाम 'दामोदर' रखा गया। 1853 में गंगाधर जी की मृत्यु हो गई। अंग्रेज़ी सरकार के लिए यह सुनहरा मौका था। 'डलहौजी' इसी अवसर की ताक पर था। उसने झाँसी को ब्रिटिश शासन में मिला लिया।

यहीं से रानी का संघर्ष आरंभ हुआ। रानी ने अंग्रेजों के इस फैसले के आगे अपना सर नहीं झूकाया और उनके विरूद्ध तलवार उठा ली। इन्होंने सन 1857 में आज़ादी का ऐसा बिगुल बजाया कि पूरा भारत उस आग में कूद गया। कई अंग्रेज़ अफसरों को रानी ने लोहे के चने चबवा दिए। वीर रानी ने युद्ध के मैदान में 17 जून 1858 में वीरगति पाई व इतिहास में अपना नाम सुनहरे अक्षरों में लिखवाया।

रानी के साहस, वीरता, निडरता ने मुझे इनका कायल बना दिया। हर समय ये मुझे प्रेरणा देती हैं कि स्त्री होना लज्जा की नहीं बल्कि सम्मान की बात है। स्त्री चाहे, तो किसी भी परिस्थिति से पार निकल सकती है। समय आए तो वे उन्हीं हाथों से तलवार उठा सकती हैं, जिन हाथों से वे कभी रोटी पकाती हैं या कलम चलाती हैं। स्त्रियाँ चाहे तो पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध के मैदान में भी साथ दे सकती है। ऐसी महान वीरागंना को मेरा शत-शत प्रणाम।

धरती को बिगाड़ता प्रदूषण

मनुष्य ने सदैव ही स्वयं के स्वार्थहित के लिए कार्य किए हैं। मनुष्य ने अनेक आविष्कार किए, अनेक ऐसी वस्तुओं का निर्माण किया, जो हमारे लिए सोचना भी संभव नहीं था। मनुष्य ने अपनी इच्छाशक्ति के बल पर अपनी कल्पना को साकार किया। इस वैज्ञानिक युग ने जहाँ एक ओर हमें प्रगति व उन्नति के पथ में अग्रसर किया है, वहीं दूसरी ओर उसने पर्यावरण का सबसे बड़ा नुकसान किया है। आधुनिक युग ने प्रकृति की जीवन शैली को आघात पहुँचाया है।

इस आघात से उत्पन्न घाव से उभरने के लिए मनुष्य को शायद ही प्रकृति द्वारा समय दिया जाए। प्रकृति के बिना पृथ्वी में रहने की कल्पना करना ही पूरे शरीर में सिहरन भर देता है। प्रकृति भगवान द्वारा दी गई बहुमूल्य भेंट है। प्रकृति, मनुष्य को सदैव देती रही है और हम याचक की तरह उसके समक्ष भिक्षा का पात्र लेकर खड़े रहे हैं। परन्तु आज स्थिति दूसरी बन गई है। हमने प्रकृति का इतना दोहन कर लिया है कि इसने अपना मैत्री भाव छोड़कर विकरालता को धारण कर लिया है।

जब से मनुष्य पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ है, उसने प्रकृति का दोहन किया है। आदिम युग में वह जानवरों की तरह ही गुफाओं या कंदराओं को अपना निवास स्थान बनाता था। धीरे-धीरे उसने अपनी जीविका के लिए खेती-बाड़ी और पशु-पालन आरंभ किया। उसका गुफाओं में रहना अब संभव नहीं था। उसने अपने आवास स्थान के लिए वनों को काटना आरंभ किया। आगे चलकर एक मामूली झोंपड़ी में आराम नहीं मिला, तो उसने पक्के घरों तथा इमारतों का निर्माण किया।

मनुष्य की बढ़ती आबादी ने नदियों का ह्रास करना आरंभ कर दिया। उसने नदियों को इस तरह से प्रदूषित किया कि आज नदियों का जल पीने लायक नहीं बचा है। इस दूषित जल से अनेक बीमारियों का जन्म हुआ है। वनों के अंधाधुंध कटाव ने प्रकृति में असंतुलन पैदा कर दिया है। जिसके फलस्वरुप प्राकृतिक आपदाएँ जैसे भूकंप, बाढ़ों, सुनामी ने अपना प्रकोप दिखाना आरंभ कर दिया है।

बढ़ते प्रकृति दोहन से जलीय, थलीय एवं वायुमंडलीय प्रदूषण बढ़ गया है। औद्योगिक कचरे के फैलाव के कारण अनेक समस्याओं व बीमारियों को आमंत्रण मिला है। वनों के कटाव से भूमि के कटाव की समस्या और रेगिस्तान के प्रसार की समस्या सामने आई है। वनों के अत्यधिक कटाव ने जंगली जानवरों के अस्तित्व को संकट में डाला है। ऊर्जा के उत्पादन के लिए अचल संपदा का स्थायी क्षय हुआ है। रसायनों के अत्यधिक प्रयोग ने मिट्टी संबंधी प्रदूषण को बढ़ाया है।

इन सभी समस्याओं पर यदि अभी ध्यान नहीं दिया गया, तो आगे चलकर ये सभी समस्याऐं विकरालता की हद को भी पार कर जाएँगी। आज पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण के कारण नित नई बीमारियाँ अपना मुँह फाड़े

मनुष्य को काल का ग्रास बनाने के लिए तैयार हैं। एक बीमारी से हम निजात पाते नहीं कि नई बीमारी आ खड़ी होती है।

बढ़ते प्रदूषण ने पर्यावरण में मौसम संबंधी परेशानियाँ खड़ी कर दी हैं। इसका परिणाम ये हो रहा है, वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। पृथ्वी का तापमान अधिक हो गया है। ऋतुओं पर भी असर देखने को मिल रहा है। गर्मी के मौसम में गर्मी और ठंडी में ठंड अधिक पड़ने लगी है। किसी मौसम में अत्यधिक बरसात से बाढ़ की स्थिति बन जाती है और हज़ारों जानों-माल का नुकसान होता है। बारिश न होने की वजह से कई स्थानों में गाँव के गाँव सूखे की चपेट में आ जाते हैं। इससे हमारी प्राकृतिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही है।

हमें चाहिए कि हम इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए अपनी आदतों को सुधारें व अपनी व्यर्थ की प्रगति पर लगाम लगाएँ। अपनी इस प्रकृति का व्यर्थ में दोहन न करें, उसे एक सहचरी की तरह प्यार व सम्मान दें। हम जितना उसका सम्मान करेंगे, वह भी हमें उतना सम्मान व प्यार देगी। अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए अत्यधिक पेड़ लगाएँ। पेड़ों के कटाव को रोकें, वातावरण में प्रदूषण को न फैलाएँ, पानी का मूल्य जानकर उसका उपयोग करें। रासायनिक जैविक कचरों को नदियों व समुद्रों में न डालें।

कारखानों पर रोक लगाएँ। वनों के विनाश को रोकने के लिए उचित कानून बनाएँ। खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए रसायनिक खाद के स्थान पर प्राकृतिक खाद का प्रयोग करें। लोगों में बढ़ते प्रदूषण के प्रति जागरुकता पैदा करने का प्रयास करें। यदि हम सब इस तरह के कार्यों को करने का बीड़ा उठाते हैं, तो हम प्रदूषण की समस्या पर जल्द ही काबू पा लेंगे व इस पृथ्वी को दुबारा स्वर्ग की तरह सुंदर बना पाएँगे।

नई जगह का मेरा अनुभव

जीवन एक बहती धारा के समान है, जो बहती रहती है। इस धारा में बहते हुए हमें बहुत अनुभव प्राप्त होते हैं। ये अनुभव दुख व सुख से भरे होते हैं। इनका भी अपने जीवन में अलग ही महत्व होता है। हर अनुभव की अपनी ही कहानी होती है, जो हमें नित नया संदेश देकर जाती है। मैंने अपने जीवन में भी ऐसे अनुभवों का सामना किया है, जो मेरे लिए शिक्षाप्रद थे। मेरा जन्म दिल्ली में हुआ। मेरी शिक्षा-दीक्षा यहाँ तक की कॉलेज की पढ़ाई भी दिल्ली में हुई।

दिल्ली का खुला माहौल मुझे सदैव से ही बेहद पंसद रहा है। यहाँ पर किसी बात की मनाही व रोकटोक नहीं थी। परिवेश बिलकुल आधुनिक था। रात को भी आ-जा सकते थे। हर तरह की सुख-सुविधाएँ यहाँ प्राप्त थीं। बिजली-पानी की व्यवस्था अच्छी थी। कुल मिलाकर यह मेरे लिए एक आदर्श स्थान था। जहाँ अपने मन मुताबिक अपना जीवनयापन सभी सुविधाओं के साथ कर सकते थे।

चूंकि पिताजी अध्यापक थे। अत: उनका स्थानांतरण गढ़वाल के एक गाँव में हो गया। पिताजी ने इसकी सूचना हमें दी। हमारे परिवार में कुल मिलाकर चार ही लोग थे। पिताजी, माताजी, मैं और मेरा भाई। मेरी शिक्षा तो समाप्त हो गई थी। भाई को पिताजी ने आगे की पढ़ाई के लिए छात्रावास में प्रवेश दिलाकर रहने का इंतजाम दिल्ली में ही कर दिया। पिताजी के साथ मैं और माताजी चले गए। मैं बहुत खुश थी। मैंने कभी गाँव नहीं देखा था। वहाँ के प्रकृति सौन्दर्य व सादगी के बारे में काफी कुछ पढ़ा व सुना था पर उन्हें देखने

का मौका मुझे अब जाकर मिला था। हमसे पहले ही पिताजी के आने का समाचार वहाँ पहुँच चुका था। हमारे रहने के लिए स्कूल के नज़दीक ही व्यवस्था कर दी गई थी।

हम बस द्वारा उस गाँव में पहुँचे। वहाँ चूकिं हम छ: बजे पहुँचे थे। अत: वहाँ की प्राकृतिक छटा अद्‌भूत थी। चारों तरफ हरियाली व्याप्त थी। हम सब वहाँ आकर खुश हो रहे थे। हम वहाँ के रहन-सहन, खान-पान तथा परिवेश से बिलकुल अनजान थे। रात होते ही हमारा रसोइया, जो स्कूलवालों की तरफ से हमें दिया गया था, एक मिट्टी के तेल की बत्ती ले आया। उसने बताया कि अभी यहाँ बिजली नहीं पहुँची है। सरकार द्वारा हर जगह सौर पैनल लगाए गए थे, उनके माध्यम से ही बिजली चलती थी।

हमारे लिए ये सब बिलकुल नया था। गाँव में रात भी दिल्ली जैसी नहीं होती। दिल्ली में हर जगह बिजली की जगमगाहट से रात का पता ही नहीं चलता था। मगर गाँव में चारों ओर घने जंगल व पहाड़ थे, जिनके कारण रात बहुत भयानक लगती थी। शाम के सात बजे के बाद तो घर से निकलना संभव नहीं था।

वहाँ रहते हुए हमें कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। वहाँ वैसे तो कुछ लोग हिन्दी जानते थे परन्तु फिर भी कई लोगों को हिन्दी नहीं आती थी। उनसे कुछ पूछना होता, तो बड़ी कठिनाई होती थी। वहाँ लोग बहुत साधारण जीवन व्यतीत करते थे। मनोरंजन के नाम पर कुछ लोगों के पास ही टी.वी थे, जो सौर ऊर्जा की बैटरी से एक या दो घंटे के लिए चलाए जा सकते थे। परन्तु जो थे, उनमें भी नेटवर्क नहीं पकड़ता था। नहाने धोने के लिए खुले स्थान थे, जिससे शौच व स्नान की दिक्कतों को झेलना पड़ा।

खाना भी बहुत साधारण हुआ करता था। दिल्ली में तो हम कभी-कभी बाहर से खाना मंगवा लिया करते थे परन्तु गाँव में संभव नहीं था। वहाँ हमारे लिए अपने कम व अपरिचित लोग ज़्यादा थे। यदि किसी भी सामान की ज़रूरत होती, तो उसे बहुत दूर से मँगवाना पड़ता था। रोज़-रोज़ चीजें मँगवाना सम्भव नहीं था। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण आना-जाना पैदल ही होता था। रास्ते संकरे और पथरीले थे। सीधी चढ़ाई थका देने वाली थी। सारी सुख-सुविधाओं से वंचित वहाँ का जीवन बहुत कष्टदायक था।

वहाँ के लोग मिलनसार व अच्छे थे। वहाँ की स्वच्छ वायु और वातावरण हमें दिल्ली जैसे शहरों में देखने को नहीं मिलता। वहाँ के लोगों तथा वहाँ की भाषा को समझने में हमें समय लगा पर उनका सहयोग हमें हमेशा प्राप्त हुआ। वहाँ रहकर मैंने ज़िन्दगी में परिश्रम के महत्व को समझा। वहाँ का जीवन बहुत कठिन था परन्तु उसके बावजूद वहाँ के लोग संतोषी व प्रसन्नता से भरपूर थे। कठिनाइयों के बीच रहना कठिन अवश्य लगा परन्तु उनके साथ रहकर मैंने भी प्रसन्नता और संतोष से रहना सीख लिया। दो साल बाद पिताजी ने दुबारा अपना स्थानांतरण दिल्ली में करवा लिया पर वे दो वर्ष अनोखे अनुभवों से भरे हुए थे।

पड़ोस का महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में उसकी हर प्रकार की ज़रूरतें पूरी होती हैं। समाज के बीच रहकर ही उसका चरित्र निर्माण होता है। मनुष्य अकेला नहीं रह सकता है। उसको अपने सुख-दुख बाँटने के लिए किसी न किसी की आवश्यकता होती है। समाज में उसका पहला रिश्ता पड़ोस से बनता है। पड़ोस का मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। पड़ोस हमारा पहला ऐसा दायरा होता है, जो हमारे सुख-दुख में सबसे पहले जुड़ता है।

हम किसी नए स्थान में घर लेते हैं, तो सबसे पहले अपने पड़ोसियों के विषय में जानने को इच्छुक होते हैं। हमारे अनुसार पड़ोसी बेशक किसी भी धर्म व जाति के हों परन्तु वो एक अच्छे घर से संबंधित लोग हों। उनका आचार-व्यवहार सबके लिए अच्छा हो। वे लड़ाकू या अपराधिक प्रवृत्ति के न हों तथा विपत्ति के समय में सबकी सहायता करने के लिए तत्पर हों।

इसका मुख्य कारण यह है कि हम अपने बच्चों व परिवार के सदस्यों के लिए एक स्वस्थ वातावरण की कामना करते हैं। यदि हमारे पड़ोसी अच्छे हैं, तो बच्चों पर उसका प्रभाव भी अच्छा पड़ता है। हमारे पड़ोस में यदि ऐसे लोग रहते हैं, जिनमें शिष्टाचार और संस्कार नहीं हैं। उनके बच्चे भी उसी तरह का व्यवहार करेंगे। हमारे बच्चे उनके बच्चों के संपर्क में आने से उनसे वही व्यवहार सीखेंगे जोकि सही नहीं है।

हमें अपने दैनिक जीवन में किसी न किसी कठिनाई और समस्याओं से जूझना पड़ता है। हर समस्या स्वयं नहीं सुलझाई जा सकती है। उसके लिए अन्य लोगों की सहायता अवश्य लेनी पड़ती है। ऐसे में एक अच्छा पड़ोसी ही काम में आता है। मसलन यदि कुछ दिनों के लिए घर से जा रहे हैं, तो उस समय एक पड़ोसी ही आपके पीछे आपके घर की देख-रेख करता है।

आप उनके भरोसे अपना घर छोड़ सकते हैं। दूसरे आपके स्कूल जाने वाले बच्चे हैं और आप नौकरीपेशा हैं, तो अपने बच्चों को उनकी देख-रेख में छोड़ निश्चिंत होकर अपने काम पर जा सकते हैं। किसी अकस्मात् हुई दुर्घटना में एक पड़ोसी ही पहला ऐसा व्यक्ति होता है, जिससे आप संपर्क कर सकते हैं।

ऐसे में यदि हमारे अपने पड़ोसियों से संबंध अच्छे नहीं हैं, तो हमारे लिए समस्याएँ विकराल रूप धारण कर सकती हैं; जैसे- घर में चोरी हो सकती है, आस-पड़ोस में लड़ाई-झगड़े बढ़ सकते हैं और बच्चों की सुरक्षा के लिए कठिनाई आ सकती हैं। पड़ोसियों से यदि हमारे संबंध मैत्रीपूर्ण हैं, तो समस्याएँ कभी ज़्यादा भयानक नहीं होगीं। यदि ऐसा हो भी जाए, तो उनका साथ पाकर समस्या को काबू किया जा सकता है।

हमारे पड़ोस में शास्त्री जी रहते हैं। उनके परिवार में दो बेटों और उनकी पत्नी नीला जी हैं। वे सब बहुत सरल और मृदुल स्वभाव के हैं। उनकी उपस्थिति सदैव एक छायादार वृक्ष के समान लगती है। मैं अपनी छोटी बहन के साथ यहाँ रहती हूँ। हम दोनों पढ़ाई के लिए देहरादून से दिल्ली आए हैं इसलिए हम दोनों का यहाँ कोई नहीं है। परन्तु शास्त्री जी और उनकी पत्नी की छत्र-छाया में हमें कभी माता-पिता की कमी महसूस नहीं हुई है।

वे हमें अपनी बेटियों जैसा ही मानते हैं। उन्होंने परेशानी के समय सदैव हमारी सहायता की है। वे हर कदम में हमारे साथे रहे हैं। वहीं से हमने पड़ोस तथा पड़ोसी के महत्व को जाना है। हमें चाहिए कि हम अपने पड़ोसियों के साथ मधुर संबंध बनाकर रखें। यदि हम उनसे व्यवहार और सहायता की उम्मीद रखते हैं, तो हमें स्वयं भी इसी तरह का व्यवहार उनके साथ करना चाहिए।

बस दुर्घटना

आज के इस आधुनिक युग में हर मनुष्य दूसरों को पीछे छोड़ना चाहता है। इसी आपाधापी में उसे हर काम की जल्दी रहती है। इसी प्रयास में वे एक दूसरे से आगे निकल जाने के लिए तत्पर रहते हैं। प्राय: वे यातायात नियमों को अनदेखा करते हैं और एक बड़ी दुर्घटना कर बैठते हैं। दिल्ली में तो सड़क दुर्घटनाएँ

आम-बात बनती जा रही हैं। बसों से होने वाली दुर्घटनाओं का कहर दिल दहला देता है। ये बस वाले अपनी स्वेच्छा से बस चलाते हैं। इनको किसी भी व्यक्ति का डर नहीं है। ट्रैफ़िक पुलिसवाले भी इसे अनदेखा करते हैं। इन्होंने ही इन्हें इतना बढ़ावा दिया है। ये इतनी रफ़्तार से बस चलाते हैं कि किसी की जान चली जाए, इनपर कोई असर नहीं पड़ता।

ऐसी ही दुर्घटना मेरे सामने घटित हुई थी, जिसने मेरे हृदय व दिमाग को झकझोर दिया था। बात उस समय की थी, जब में कॉलेज के प्रथम सत्र में पढ़ा करता था। मेरा कॉलेज लोधी कॉलोनी के पास स्थित था। मैं शाम के कॉलेज में पढ़ा करता था इसलिए हमारे कॉलेज का समय सांय 6 बजे समाप्त हुआ करता था।

उस दिन मैं और मेरे 5 दोस्त कॉलेज समाप्त होने के बाद बस स्टैंड पर आकर अपने बस की प्रतिक्षा में बैठे हुए थे। दोनों तरफ के स्टैण्ड कॉलेज विद्यार्थियों से खचाखच भरे हुए थे। सभी पूरे स्टैण्ड में समूह में बिखरे हुए बस के इंतजार में थे।

अभी मुझे बस का इंतजार करते हुए 15 मिनट ही हुए थे कि हमने देखा सामने वाली सड़क से दो प्राईवेट बस चली आ रही थीं। दोनों बसों की रफ्तार लगभग 90 की रही होगीं। दोनों बस के चालक अपनी बस को एक-दूसरे से आगे निकालने की होड़ में बस को तेज़ी से भगा रहे थे। उनकी इस प्रतियोगिता में उनको इस बात का ध्यान ही नहीं रहा कि अगला स्टैण्ड कॉलेज का है और इस समय वह बच्चों से भरा रहता है।

उनकी इसी दौड़ में अचानक से एक बस के टायर फटने की आवाज़ आई, जिससे बस चालक का नियंत्रण बस से खो गया और वह हमारे सामने वाली सड़क पर बने स्टैण्ड से जा टकराई। उसके इस तरह टकराने से 20 छात्र जो स्टैण्ड पर खड़े थे, बस की चपेट में आ गए। चारों तरफ चीख-पुकार मच गई। पूरा स्टैण्ड घायल छात्रों से भरा पड़ा था। चारों तरफ खून बिखरा पड़ा था। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। तभी मेरे एक दोस्त ने नज़दीक के पुलिस स्टेशन पर फोन किया व पुलिस को सूचना भिजवा दी।

दूसरे दोस्त ने समय न गँवाते हुए सफ़दरजंग में फोन कर अस्पताल को सूचित कर दिया। हम सब दोस्तों ने अन्य लड़कों और लड़कियों को इकट्ठा कर ज़ख्मी व घायल छात्रों की मरहम पट्टी में लग गए। क्योंकि पुलिस व एम्बुलेंस को आने में समय था। हमने रास्ते में ही गाड़ियों को रोक कर घायल हुए छात्रों को उसमें डालकर अस्पताल भिजवाने का प्रबन्ध किया। कुछ छात्रों ने बस के ड्राइवर को पकड़कर बाँध दिया। कुछ समय पश्चात ही पुलिस की जीप भी आ गई। उस बस ड्राइवर को पुलिस को सौंप दिया गया व बाकि बचे घायलों को अस्पताल पहुँचाया गया।

तत्पश्चात हमने सभी घायल विद्यार्थियों के परिचितों को सूचित किया। कुछ घायलों को तो तत्काल छुट्टी दे दी गई परन्तु कुछ को अस्पताल में ही रखा गया। सबने हमारे कार्यों को सराहा। वह घटना आज तक मेरे मानस-पटल में गहरी छाप छोड़े हुए है, जो सदैव मुझे याद रहेगी।

भारत की रंगबिरंगी ऋतुएं

भारत ऋतुओं का देश कहा जाता है। हमारे देश में अनेक ऋतुएँ होती हैं। जितनी ऋतुएँ भारत में हैं, उतनी किसी अन्य देश में नहीं है। भारत में ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, शरद् ऋतु, हेमंत ऋतु, शिशिर ऋतु और वसंत ऋतु मिलाकर छ: ऋतुएँ होती हैं। ये ऋतुएँ दो-दो महीने की होती है। हिन्दी तिथि के अनुसार वैशाख व जेठ

का महीना ग्रीष्म ऋतु कहलाता है, वर्षा ऋतु आषाढ़ व सावन का महीना होता है, शरद् ऋतु का भाद्र व आश्विन का महीना होता है, हेमंत का कार्तिक व अगहन, पूस व माघ का शिशिर का महीना होता है और फाल्गुन व चैत्र का महीना वसंत ऋतु का होता है। हर ऋतु का अपना ही महत्व और विशेषता होती है।

ग्रीष्म ऋतु अपने नाम के अनुसार ही गर्म व तपन से भरी मानी जाती है। इस ऋतु में रातें छोटी व दिन लम्बे होते हैं। इस ऋतु में रोगाणु बड़ी तेज़ी से पनपते हैं, जिसके कारण पेट से संबंधित बीमारियाँ अधिक होती हैं। अत्यधिक गरमी के कारण लोग परेशान व बेहाल हो जाते हैं। दोपहर में घर से निकलना कठिन हो जाता है। पृथ्वी गरम तवे की भांति तपने लगती है। ठंडे पेय पदार्थों को पीकर लोग गर्मी से शीतलता पाने का प्रयास करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में मौसमी फलों; जैसे- जामुन, शहतुत, आम, खरबूजे, तरबूज आदि की बहार आई होती है।

ग्रीष्म ऋतु के समाप्त होते-होते वर्षा ऋतु अपनी बौछारों के साथ प्रवेश करती है। ग्रीष्म ऋतु के बाद इस ऋतु का महत्व अधिक देखने को मिलता है क्योंकि गरमी से बेहाल लोग इस ऋतु में आराम पाते हैं। वर्षा कि बौछार तपती धरती को शीतलता प्रदान करती है। जहाँ एक ओर लोगों के लिए यह मस्ती से भरी होती है, वहीं दूसरी ओर यह किसानों के लिए बुआई का अवसर लाती है।

चावलों की खेती के लिए तो यह उपयुक्त मानी जाती है। गरमी से मुरझाए पेड़, लता और पुष्पों में बहार छा जाती है। जगलों और बागों में कोयलों के मधुर स्वर व मोरों का आकर्षक नृत्य दिखाई देने लगते हैं। कवियों ने इस ऋतु को अपनी काव्य रचना के लिए उपयुक्त माना है। यह ऋतु प्रेम व रस की अभिव्यक्ति के लिए अच्छी मानी जाती है, इसी कारण इसे ऋतुओं की रानी कहा जाता है। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने वर्षा ऋतु का सुन्दर चित्रण किया है-

सुनकर बादलों का हर्ष नाद, मन में छाया जाए उन्माद

वर्षा ऋतु एक तरफ जहाँ तन व मन को प्रसन्नता से भर देती है, वहीं दूसरी तरफ इसके कारण चारों ओर पानी ही पानी भर जाता है। अधिक वर्षा से खड़ी फसलें खराब हो जाती हैं। नदियों में जल का स्तर बढ़ने से बाढ़ व बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है। फिर भी यह ऋतु मन-भावन ऋतु है।

वर्षा ऋतु के समाप्त होते-होते शरद ऋतु अपना प्रभाव दिखाना आरंभ कर देती है। वातावरण में ठंडापन आने लगता है। इसमें करवाचौथ, नवरात्रें, दुर्गा-पूजा, दशहरा व दीपावली त्यौहारों का ताँता लग जाता है। इस ऋतु में दिन छोटे होने लगते हैं।

शरद् के तुरंत बाद हेमंत ऋतु अपना रूप दिखाना आरंभ करती है। सरदी बढ़ने लगती है। दिन और छोटे होने लगते हैं। हेमंत के समाप्त होते-होते शिशिर ऋतु का प्रकोप आरंभ हो जाता है। कड़ाके की ठंड पड़ने लगती है। लोगों का सुबह-सवेरे काम पर निकलना कठिन होने लगता है। अत्यधिक ठंड से व कोहरे से जन-जीवन अस्त-व्यस्त होने लगता है।

इस ऋतु में धनिया, मेथी, पालक, मटर, गाजर, बैंगन, गोभी, मूली, सेब, अंगूर, अमरूद, संतरे इत्यादि सब्जियों व फलों की बहार आ जाती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह ऋतु उत्तम होती है क्योंकि इस ऋतु में पाचन शक्ति मजबूत होती है। इस ऋतु के मध्य में पूरा भारत सर्दी के कारण ठिठूरने लगता है। घरों में

ऊनी कपड़े व रजाई निकल जाती हैं। गर्म चाय के साथ रजाई में बैठकर इस ऋतु का आनंद लेने का अपना ही मज़ा है। किसी ने सही ही लिखा है-

आयी सरदी, आयी सरदी ठिठुरन साथ में लायी सरदी

शिशिर ऋतु के जाते ही सबके दरवाज़ों पर वसंत ऋतु दस्तक देने लगती है। इस ऋतु से वातारण मोहक व रमणीय बन जाता है। यह ऋतु रसिकों की ऋतु कहलाती है। प्राकृतिक की आभा इसी ऋतु में अपने चरम सौंदर्य पर देखी जा सकती है। बागों में आमों की बहार आ जाती है। चारों तरफ फल एवं फूलों की बहार देखते ही बनती है। यह ऋतु हर जन-मानस का मन हर लेती है। इसकी ऋतु की सुंदरता के कारण ही इस ऋतु को ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है।

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार वह बीमारी है, जो देश और समाज को धीरे-धीरे खोखला बना देती है। भ्रष्टाचार शब्द का जन्म 'भ्रष्ट' और 'आचार' शब्द से मिलकर हुआ है, जिसका अर्थ है दूषित या विकृत व्यवहार (आचार) करने वाले अर्थात ऐसे लोग जो दूषित व्यवहार करते हैं। ऐसे लोग समाज और देश को दीमक की तरह चाट रहें हैं।

हमारे देश में बहुत-सी समस्याएँ मुँह फाड़े खड़ी हैं परन्तु भ्रष्टाचार इन्हीं सभी समस्याओं में सबसे आगे खड़ी है। भ्रष्टाचार विरोधी संस्था ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार इस बार सूची में भारत का 84 वां स्थान है। यह बहुत शर्म की बात है कि भारत भ्रष्ट देशों की सूची में शामिल है। यह चिंताजनक बात है कि भारत का नाम इस सूची में है। यह तो सभी जानते हैं कि भारत में भ्रष्टाचार हो रहा है। परन्तु उसका स्तर इतना बढ़ गया है कि उसकी आँच अन्य देशों तक पहुँचने लगी है।

भारत के अंदर भ्रष्टाचार का फैलाव दिन-भर-दिन बढ़ रहा है। किसी भी क्षेत्र में चले जाएं भ्रष्टाचार का बोल-बाला दिखाई दे जाएगा। भारत के सरकारी व गैर-सरकारी विभाग इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण हैं। आप यहाँ से अपना कोई भी काम करवाना चाहते हैं, बिना रिश्वत खिलाए काम करवाना संभव नहीं है। मंत्री से लेकर संतरी तक को आपको अपनी फाइल बढ़वाने के लिए पैसे का उपहार चढ़ाना ही पड़ेगा। स्कूल व कॉलेज भी इस भ्रष्टाचार से अछूते नहीं है। बस इनके तरीके दूसरे हैं।

गरीब परिवारों के बच्चों के लिए शिक्षा सरकारी स्कूलों व छोटे कॉलेजों तक सीमित होकर रह गई है। नामी स्कूलों में दाखिला कराना हो, तो डोनेशन के नाम पर मोटी रकम मांगी जाती है। बैंक जो की हर देश की अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ हैं, वे भी भ्रष्टाचार के इस रोग से पीड़ित हैं। आप किसी प्रकार के लोन के लिए आवेदन करें पर बिना किसी परेशानी के फाइल निकल जाए, यह संभव नहीं हो सकता।

देश की आंतरिक सुरक्षा का भार हमारे पुलिस विभाग पर होता है परन्तु आए दिन ये समाचार आते-रहते हैं कि आमुक पुलिस अफ़सर ने रिश्वत लेकर एक गुनाहगार को छोड़ दिया। भारत को यह भ्रष्टाचार खोखला बना रहा है।

समाज में फन फैला रहे इस विकराल नाग को हमें मारना होगा। सबसे पहले आवश्यक है, प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए अपने को इस

भ्रष्टाचार से बाहर निकालना होगा। यही नहीं शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए, जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को पहचाने। वे इसे संस्कार स्वरुप लेकर स्वयं के स्वरूप को विकसित करें। हमें न्यायिक व्यवस्था को कठोर बनाना होगा तथा सामान्य जन को आवश्यक सुविधाएँ भी उपलब्ध करानी होगी। इसी आधार पर हमें आगे बढ़ना होगा तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है।

समाज में यदि एक भ्रष्ट व्यक्ति विद्यमान है, तो हमें भी उसके साथ भ्रष्ट होने की आवश्यकता नहीं है। यदि हम भी स्थिति से विवश होकर स्वयं भी भ्रष्ट हो जाते हैं, तो हम ऐसी श्रृंखला की रचना करते हैं, जिसका कभी अंत नहीं होगा। यह श्रृंखला दिन-भर-दिन बढ़ती ही चली जाएगी। इस भ्रष्टाचार की समस्या को हमें जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। नहीं तो यह ऐसा पेड़ बनकर उभरेगा जिसकी छाया हमारे साथ हमारे देश को भी निगल जाएगी। हम सब मिलकर यह प्रण करें की भ्रष्टाचार को मिटा कर रहेंगे, न स्वयं रिश्वत लेगें, न दूसरों को रिश्वत लेने देगें।

मीडिया और उसकी भूमिका

वर्तमान युग मीडिया का युग कहलाता है। यह सबसे बड़ा दबाव और शक्ति सम्पन्न क्षेत्र है, जो चाहे तो सरकार को भी हिला कर रख दे। बदलते समय के साथ मीडिया के रूप एवं अधिकारों में ज़बरदस्त बदलाव देखने को मिला है। अंग्रेज़ों के कारण ही भारत में मीडिया का आगमन हुआ। समाचार-पत्रों ने आज़ादी की लड़ाई में मुख्य भूमिका निभाई। पूरा भारत इन्हीं समाचार-पत्रों के कारण आपस में जुड़ा रहा।

गुलाम भारत में अंग्रेज़ों ने समाचार-पत्रों के प्रकाशन में बड़ी कड़ाई से प्रतिबंध लगा रखा था। सरकार विरोधी कार्यों की आलोचना करना जुर्म था। कई देशभक्तों ने फिर भी अपने कर्तव्यों का पालन किया। उन्होंने समाचार-पत्रों के द्वारा अंग्रेज़ी शासन की काली करतूतों को छापकर जनता को चेताया और उन्हें आज़ादी पाने के लिए प्रोत्साहित किया। उस समय भी समाचार-पत्रों ने अपनी भूमिका को सिद्ध कर दिया था। परन्तु वह आज़ादी की लड़ाई थी।

अब समय बदल चुका है, समाचार-पत्रों के साथ-साथ आज टी.वी पर न्यूज़ चैनलों की भरमार है। इन दोनों का क्षेत्र एक ही है परन्तु आज ये प्रिंट मीडिया (समाचार पत्र-पत्रिकाएँ) और इलेक्ट्रानिक मीडिया (न्यूज़ चैनलों) के नाम से जाने जाते हैं। भारत में इनकी स्थिति बहुत ही मज़बूत है। समाचार-पत्रों व न्यूज़ चैनलों पर सरकार का नियंत्रण नहीं है। आज समाचार-पत्रों और न्यूज़ चैनलों की भरमार ने इनके बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ा दिया है।

इस प्रतिस्पर्धा की होड़ ने लोगों के जीवन में प्रवेश कर खबरें लाने का चलन बढ़ा दिया है। इस प्रकार की खबरें कई बार समाज के लिए लाभकारी होती हैं। इन समाचार के द्वारा इन्होंने कई भ्रष्ट नेताओं और सरकारी कर्मचारियों की करतूतें जनता के सम्मुख रखीं। इस प्रकार के समाचारों ने भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने का कार्य किया। कई स्त्रियों और बच्चों के साथ हो रहे अत्याचारों को सरकार के सम्मुख रखा और उन्हें न्याय दिलाने का प्रयास भी किया।

आरंभ में जब इस तरह का कोई कार्यक्रम या समाचार आता था, तो वह मूर्ख बन रही जनता को चेताने के लिए था। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है 'जैसिका लाल हत्याकांड'। सात साल तक यह केस चला और

इसके मुज़रिम को बरी कर दिया गया। तब मीडिया के ज़बरदस्त दबाव ने इस केस की पोल खोलकर रख दी। एन.डी.टी.वी., तहलका पत्रिका, हिन्दुस्तान टाइम्स जैसे न्यूज़ चैनल तथा समाचार पत्र-पत्रिकाओं ने इस केस का रूख ही मोड़ दिया। उन्होंने सरकार पर ऐसा दबाव बनाया कि उसके मुज़रिम को सज़ा मिलकर रही।

यह मीडिया का प्रभावशाली रूप था। उनका उद्धेश्य भी स्पष्ट था। वे जनता के सहायक के रूप में कार्य कर रहे थे। लेकिन जैसे-जैसे चैनलों और समाचार-पत्र-पत्रिकाओं के बीच आपसी प्रतिस्पर्धा बढ़ रही हैं, वे अपने सच्चाई के रास्ते से भटक रहे हैं। एक समाचार को कई बार इस तरह से दिखाया जाता है कि समझ ही नहीं आता है कि कौन-सी खबर सही है और कौन-सी गलत।

आंकड़ों का अंतर कई बार तो लोगों को भ्रमित कर देता है। आज बस स्वयं को अच्छा साबित करना है फिर चाहे छानबीन किए बिना किसी भी खबर को छाप दिया जाए। स्टिंग आपरेशन के नाम पर सरकारी स्कूल में कार्यारत अध्यापिका को अपने विद्यालय की छात्रों से वेश्वावृति करवाने का आरोप लगाया। बाद में जब इस विषय पर पुलिस द्वारा हस्तेक्षप किया गया, तो पाया गया कि अध्यापिका पर हुआ स्टिंग आपरेशन फर्ज़ी था।

माफी माँगकर उनका दुख कम नहीं किया जा सकता है और सम्मान भी वापिस नहीं दिलाया जा सकता है। जहाँ, मीडिया सच के लिए लड़ सकती है, वहाँ वह स्वयं के लिए लड़ती नज़र आने लगी है। टी.वी. में मनोरंजन चैनल भी इस ओर रूख कर रहे हैं परन्तु इसके परिणाम दुखद होते हैं। 'राखी का इंसाफ' नामक धारावाहिक इस सच के खेल का फूहड़ रूप है, इसके कारण एक व्यक्ति को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा है।

हम सच्चाई पेश करने के चक्करों में लोगों के जीवन में गहराई से जाकर सच को निकाल रहे हैं, जो समाज के साथ उस व्यक्ति की जिंदगी को भी बरबाद कर सकता है। इन समाचार पत्र-पत्रिकाओं व चैनलों को चाहिए झूठ का पर्दा उठाए न की लोगों के निजी जीवन के परदे को उठाएँ।

मीडिया की भूमिका सशक्त है। यह बेसहारा और बेबस लोगों के लिए आखिरी मार्ग है, जिसके द्वारा अपने हक के लिए लड़ सकते हैं। यदि यही सहारा अपनी भूमिका को छोड़, लोगों की बेबसी और लाचारी में अपना स्वार्थ देखने लगेगा, तो आम व्यक्ति कहाँ जाएगा। मीडिया को चाहिए की अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते हुए सच्चाई का साथ दे। तभी देश और लोगों का भला हो सकता है।

मेरी प्रिय पुस्तक

'पुस्तकें' हमारे जीवन की मूल्यवान धरोहर हैं।ये हमेंजीवनके मार्गपर चलने की दिशा प्रदान करती हैं। ये एक अच्छे मित्र की भाँति सदा हमारे साथ रहकर हमारा मार्गदर्शन करती हैं। इनके बिना एक मनुष्य कभी शिक्षित नहीं बन सकता। इनका साथ हमारे जीवन में बचपन से ही आरंभ हो जाता है और सारी उम्रतक बना रहता है। हम जब तक चाहें इन्हेंअपना साथी बनाकररख सकते हैं। ये निस्वार्थभाव से हमारे साथ रहकर हमारे ज्ञान में वृद्धि करती हैं।

मुझे भी पुस्तकों से बहुत प्यार है। मैंने अपने जीवनकाल में अनगिनत पुस्तकें पढ़ी हैं। परन्तु जिस पुस्तक ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया,वह कबीर ग्रंथावलीहै। यह पुस्तक मेरेदादाजी ने मुझे दी थी। जब इस ग्रंथको मैंने सर्वप्रथम पढ़ना आरंभ किया,तो मेरे लिए इसका कोई खास महत्वनहीं था। मेरे लिए यह मजबूरी में पढ़ने जैसा था। परन्तु धीरे-धीरे मैंने पढ़ना आरंभ किया।जैसे-जैसे में इसे पढ़ता गया, मेरी रूचि इसमें बढ़ने लगी। इसे पढ़कर मुझे बहुत-सी बातें पता चली, उदाहरण के लिएमैंने इसमें जीवन के सत्य को बड़े समीप से महसूस किया। कबीर का प्रभु से प्रेम का भी बहुत सुंदररूप देखने को मिलताहै। तभी वे कहते हैं-

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।

लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल।

कबीरभगवान को मूर्तियों या जंगलों में नहीं तलाशते बल्कि भगवान को अपने हृदय में तलाशते हैं। स्वयं को प्रभु प्रेम में डूबा हुआ पाते हैं। उनका भगवान घट-घट यानि मंदिरों में निवास नहीं करता। वे संसार के प्रत्येक हृदय में निवास करता है। उनकी इस पुस्तकमें उस समय की सामाजिक व्यवस्था का भी चित्रण मिलता है,जो आज भी प्रासंगिक है।

कबीर कालीन समाज में चारों तरफ छुआछूत, पूजा-विधि, नमाज़, व्रत आदि आडम्बर व्याप्त थे,जिनका उन्होंने विरोध किया। हिंदु-मुस्लिम के बीच में दीवार काफी ऊँची थी। कबीर नेअपने उपदेशों के माध्यम से उनके बीच की दूरियों को घटाने की कोशिश की। इससे दोनों संप्रदायों के परस्पर मिलन में सुविधा हुई। कबीर ने अपने ग्रंथ के माध्यम से लोगों में सत्य, पवित्रता, सदाचार, भक्तिआदि गुणों का महत्वबताते हुए उन्हें आत्मसात करने की सलाह दी।

ऐसा करकेमनुष्य एक सात्विक जीवनयापन कर सकता था। उन्होंने समाज में व्याप्त मूर्ति पूजा, नमाज़ व रोज़े का खण्डनकिया। उनके अनुसार भगवान को प्राप्त करने के ये साधन सही नहीं हैं। वे कहते हैं, "यदि पत्थर की पूजा करकेआप भगवान को प्राप्त कर लेते हैं,तो आज इस संसार में सबको ईश्वर प्राप्त हो जाते"। मस्जिद में खड़े होकर खुदा-खुदा चिल्लाकर खुदा मिल जाता,तो वे शायद सभी ऊँची-ऊँची मीनारों पर जाकर चिल्लाते। अपनी बात को सिद्ध करते हुए,उन्होंने कहा है–

पाहन पूजे हरि मिलैं, तो मैं पूजूं पहार।

ताते यह चाकी भली, पीस खाए संसार।

अर्थात् यदि पत्थर को पूजकर मुझे भगवान मिलते,तो मैं पहाड़ को पूजता। लेकिन इस पत्थर से बनी वो चक्की अच्छी है,जिसके चलने से संसार का पेटभरता है।

कबीर स्वयं पढ़े लिखे नहीं थे परन्तु उनके दोहों और साखियों में ज्ञान की गहरी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।उनकी भाषा सरल व समस्त भाषाओं का मिश्रित रुप हैइसलिएयह जन-जन की भाषा बन गई।कबीर की भाषा विभिन्न भाषाओं के मिश्रण के कारण सुधक्कड़ी या खिचड़ी भाषा कहलाई।

उनके ग्रंथ की इन्हीं खूबियों ने इसे मेरा प्रिय ग्रंथ (पुस्तक) बना दिया। विश्व में भी कबीर के इन्हीं गुणों के कारण उनके ग्रंथ को सम्मान प्राप्त हुआ है। कबीर ग्रंथावली कीश्रेष्ठता के कारण ही भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहरके रूप में आज भी जीवितहै।

युवाओं में चरित्र की कमी

'चरित्र' शब्द हर व्यक्ति के गुणों व अवगुणों का दर्पण है। इस दर्पण में देखकर दूसरा मनुष्य हमारा मूल्यांकन करता है। सभी ग्रंथों में मनुष्य के चरित्र को विशेष महत्त्व दिया गया है। राजा हरिश्चन्द्र, भगवान राम, श्रीकृष्ण, महात्मा गाँधी, लाल बहादुर शास्त्री जैसी महान विभूतियाँ हैं, जिन्होंने अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण समाज में एक विशेष स्थान प्राप्त किया है।

जैसे-जैसे युग बदलते गए मनुष्य की चारित्रिक विशेषताएँ लुप्त होती जा रही हैं। सच्चाई, ईमानदारी, बड़ों का सम्मान आदि बातें मनुष्य के चरित्र का मुख्य आधार हुआ करती थीं, वे कहीं धुंधला गई हैं। आज के इस आधुनिक युग की चकाचौंध में मनुष्य कहीं अपने सारे मूल्य खोता जा रहा है। अपनी बाहरी सुंदरता को इस तरह चमकाने में लगा है कि उसने इन मूल्यों की उपेक्षा करना आरंभ कर दिया है।

समाज की रीढ़ उसका युवावर्ग होता है। युवावर्ग समाज को एक नई दिशा और एक नया रुप प्रदान करता है। युवावर्ग इतनी शक्ति रखता है कि वे चाहे, तो समाज में एक क्रांति पैदा कर दे। इसका उदाहरण हैं- आज़ादी के समय का युवावर्ग। इस वर्ग ने अपने क्रांतिकारी विचारों से भारत को गुलामी से आज़ादी की ओर अग्रसर किया। उन्होंने सच्चाई, ईमानदारी, देशभक्ति, बलिदान और त्याग के द्वारा भारत के इतिहास में अपना नाम सुनहरे अक्षरों में लिखवा दिया।

अत्यधिक पीछे के इतिहास में जाएँ, तो राजा राम जैसे प्रतापी राजा अपनी चारित्रिक विशेषताओं से इतिहास में अमर हो गए। उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहा गया। यह सम्मान उन्हें शारीरिक सुंदरता या राजपुत्र होने के कारण प्राप्त नहीं हुआ अपितु अपने वचनबद्ध, मृदुलभाषी, सहनशील, आज्ञाकारी, सदाचारी, सत्यवादी, कर्तव्यनिष्ठ, न्यायप्रिय आदि गुणों के कारण प्राप्त हुआ। इसके विपरीत आज के युवाओं में इन गुणों का सर्वथा अभाव देखा जा सकता है।

आज के कुछ युवा पथ भ्रमित हो रहे हैं। अपने मूल्यों और चरित्र का नाश करते हुए वे फ़ैशन में स्वयं को तलाशते हुए फिर रहे हैं। वे इस लीपा-पोती के चक्कर में स्वयं की अंदरुनी शक्ति का ह्रास कर रहे हैं। फ़ैशन के कारण वे धन और समय दोनों का व्यय करते हैं। घर से बाहर रातभर मौज़-मस्ती के नाम पर घूमते रहते हैं। घर में बड़ों से झूठ बोलते हैं। माता-पिता के द्वारा माँगों को पूरा नहीं किए जाने पर उनसे अपशब्द बोलते हैं। वे भूल जाते हैं कि अपनो से बड़ों का सम्मान करना चाहिए।

समाज में सरेआम स्त्रियों व लड़कियों के साथ छेड़खानियों के मामले बढ़ने लगे हैं, जगह-जगह शराब व जुए के कारण मार-पीट व हत्याओं के मामले ज़ोर पकड़ने लगे हैं। युवा इन अनैतिक कार्यों में लिप्त रहने के कारण अपना चरित्र निर्माण नहीं कर पाते। समाज में युवावर्ग का चारित्रिक पतन हो रहा है। हमें चाहिए कि हम चरित्र के महत्त्व को समझें। सदैव इस बात को स्मरण रखें, फैशन हमारे बाहरी रुप को तो सुंदरता प्रदान कर सकता है। परन्तु हमारा सही परिचय हमारा व्यक्तित्व ही होता है।

अपने अंदर मृदुभाषी, सहनशील, आज्ञाकारी, सदाचारी, सत्यवादी, कर्तव्यनिष्ठ, देशभक्ति, ईमानदारी आदि गुणों का विकास करें। ये गुण किताबी बातें नहीं हैं यदि इन्हें अपना लिया जाए, तो जीवन की दिशा ही बदल जाती है। समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाने के लिए प्रयासरत रहें। बड़ों व दूसरों को सम्मान दें। ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करें। बुरी आदतों से स्वयं को दूर रखें। समाज में स्वयं की एक मिसाल कायम करें।

वर्षा की अंधेरी रात

वर्षा की वह काली अँधेरी भयानक रात। आज भी मेरे स्मृति पटल पर उसका स्मरण आते ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मैं पिताजी से मिलने के लिए मसूरी से दिल्ली जा रही थी। मैंने तय किया कि मैं अलग-अलग बसों में न जाकर सीधे मसूरी से दिल्ली जाने वाली बस में ही जाऊँगी। इससे बस बदलने की परेशानी से बच जाऊँगी। वह बस केवल शाम को 7:30 बजे ही चलती है। नियत समय पर मैं उस बस में जा बैठी।

मसूरी का मौसम कब बदल जाए प्राय: इस बात पर कोई विशेष टिप्पणी नहीं की जा सकती है। दो दिनों से लगातार वर्षा हो रही थी। परन्तु सुबह अचानक मौसम साफ हो गया था पर शाम होते-होते कोहरे का आँचल फिर फैल गया था। बस में कोई 10 यात्री बैठे हुए थे। बस में एक परिवार भी बैठा हुआ था। उस परिवार में पति-पत्नी और दो लड़कियाँ थीं। मुझे अकेला देखकर उस परिवार ने मुझसे बातें करना आरंभ कर दिया, जिससे मेरी अकेले होने की घबराहट जाती रही। जब हमारी बस मसूरी की पहाड़ियों से उतरने लगी, तब तक कोहरा और भी घना हो गया था।

हमें निकले हुए कुछ ही देर हुई थी कि बस का एक टायर पंचर हो गया। इतनी ज़ोर का धमाका हुआ कि हम सबके तो प्राण ही सूख गए। वर्षा फिर आरंभ हो चुकी थी। ड्राइवर ने आगे जाने से इंकार कर दिया। परन्तु कंडक्टर व अन्य यात्रियों के अनुनय-विनय करने पर उसने टायर बदला और हम फिर चल पड़े। इस बीच में एक घंटा बीत चुका था। आकाश में तेज़ बिजली चमकने लगी व मूसलाधार वर्षा होने लगी।

तेज़ हवाओं व बारिश के कारण बस चलाना ड्राइवर के लिए कठिन हो गया था। ड्राइवर अन्य यात्रियों को कोसने लगा। एक तो इतना दुर्गम रास्ता दूसरा इतनी मूसलाधार वर्षा। इस बारिश में पहाड़ों से स्वत: ही अनगिनत जलधाराएँ निकल पड़ती हैं। पहले से ही बनी जलधाराएँ एक बड़े-से जल-प्रपात का रुप धारण कर लेती हैं।

बारिश में बनी बड़ी-बड़ी जलधाराएँ पहाड़ों तक को भेद डालती हैं, जिससे पत्थर इन धाराओं के साथ बहते हुए रास्तों पर मिट्टी के ढेर के साथ गिरने लगते हैं। हमारी स्थिति ऐसी बन गई थी कि आगे कुआँ पीछे खाई। इस अवस्था में चलकर वापिस जाना संभव नहीं था। आगे जाना मौत को दावत देने जैसा था। ड्राइवर हम सब पर कोध्रित था। किसी सहायता की उम्मीद करना बेवकूफी थी।

वर्षा के कारण सर्दी बढ़ने लगी थी। सबके पास पर्याप्त गर्म वस्त्र नहीं थे। खिड़की से जल बहता हुआ बस के अंदर आने लगा था। अब, सब वर्षा के समाप्त होने का इंतजार करने लगे। ड्राइवर ने एक सुरक्षित स्थान पर गाड़ी को किनारे लगा दिया। वर्षा थी जो थमने का नाम ही नहीं ले रही थी और न ही कम हो रही थी। वह तो जैसे अपनी विकरालता का तांडव उस अंधेरी रात में खेल रही थी।

हम सब बस में अपनी-अपनी सीटों पर दुबक कर मारे भय के काँप रहे थे। तभी हमें अपने समीप कोई व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया, उसने बताया आगे खाई में 75 यात्रियों से भरी बस गिर गई है और किसी के बचने की संभावना नहीं है। वह तो अपनी गाड़ी छोड़कर उसकी सूचना देने वापस जा रहा था। परन्तु स्थिति ऐसी थी कि उसको भी हमारे साथ बस में ही रात व्यतीत करनी पड़ी।

उस भयानक रात में मैंने नज़रे उठाकर बस से बाहर देखने का प्रयास किया। चारों तरफ भयानक कालिमा को लिए रात फैली हुई थी। सारा जंगल भयानक आँधी से काँप रहा था। पेड़ ऐसे लगते थे, मानो साक्षात भूतों की मंडली भयानक नृत्य करती हुई हमारी ओर चली आ रही हो। उस पर ये भयानक बारिश उनके नृत्य पर अपनी छाप छोड़े जा रही थी। हमारे पास खाने का ज़्यादा समान नहीं था। परन्तु सबने मिल-जुलकर भोजन किया।

अभी ये सब होते हुए 3 घंटे ही बीते थे कि आकाश में भयानक गर्जना हुई। मानो सारा आकाश फट पड़ा हो। कंडक्टर के अनुसार कहीं बादल फटा था। हमने देखा आकाश से बिजली गिरकर हमारे पास के पेड़ पर जा गिरी और वह पेड़ एक क्षण में ही राख के ढेर में परिवर्तित हो गया। हम सब डर से चिल्लाने लगे पर किसी तरह कंडक्टर ने हमें समझाया-बुझाया, तब जाकर सब चुप हुए। मेरे साथ जो परिवार था, उन्होंने मुझे बेटी की तरह संभाला।

धीरे-धीरे रात बीत गई। सारे रास्ते पेड़ों के टूटने, पत्थरों के गिरने व पानी की वजह से अवरुद्ध हो गए थे इसलिए हमें अपना सामान लेकर वापस मसूरी पैदल ही जाना पड़ा। चार-पाँच दिनों तक मौसम ऐसा ही बना रहा। छठे दिन जाकर ही मुझे घर जाने का अवसर मिला। आज इस बात को बीते हुए दो वर्ष हो गए हैं। इसके बाद मैंने कितनी ही बारिश की रातें देखी पर वह रात मैं कभी भूल नहीं पाती। वह रात मेरी स्मृति पटल में इस प्रकार बैठ गई है कि उसका डर अपने दिल से निकाल पाना मेरे लिए संभव नहीं है।

वसंत ऋतु

वसंत ऋतु माघ शुक्ल पक्ष से फाल्गुन पूर्णिमा तक चलने वाली ऋतु है। भारतवर्ष ऐसा देश है, जिसमें छः ऋतुऐं आती हैं। वसंत ऋतु को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। यह ऐसी ऋतु है, जिसमें प्रकृति अपना अपूर्व सौंदर्य दर्शाती है। इस ऋतु के आते ही प्रकृति का कण-कण मानो प्रसन्नता से खिल उठता है। चारों तरफ व्याप्त हरियाली, फूलों से लदे पेड़-पौधे, सुंगध से युक्त वातावरण मन में प्रसन्नता भर देता है। अपने इन्हीं गुणों के कारण रसिकों और कवियों की यह प्रिय ऋतु है और इसे विभिन्न नामों जैसे- मधुरितु, ऋतुराज और कुसुमाकर से भी जाना जाता है।

वसंत ऋतु में सूखे पत्ते झड़ जाते हैं और नए पत्ते आने लगते हैं। यह ऋतु सब ऋतुओं से सुंदर, सुहावन, आकर्षक एवं मनमोहक होती है। हर व्यक्ति इस ऋतु में व्याप्त सुंदर मौसम में बाहर घूमने-फिरने की लालसा रखता है। चारों ओर फूल ही फूल दिखाई देते हैं। इस ऋतु में गुलमोहर, सूरजमुखी, चंपा, गुलाब, चमेली आदि पुष्पों का सौंदर्य सबको अपने आकर्षण में बाँध लेता है। भंवरे फूलों की बहार देखकर उनके रस का पान करने के लिए लालायित हो उठते हैं।

कोयल पंचम स्वर में गाती है और सभी को कुहू-कुहू की आवाज़ से मंत्रमुग्ध करती है। खेतों में नई फसलें पक जाती हैं। सरसों, राई और गेहूँ के खेत मन को लुभाने लगते हैं, जिन्हें देखकर किसान गद्गद् हो उठता

है। प्रकृति को देखकर लगता है मानो प्रकृति ने सुंदर वस्त्र धारण कर लिए हों। सरोवर के शांत जल में खिले हुए कमल के फूल, उसकी शोभा को चार चाँद लगा देते हैं। आकाश में हर तरफ़ पक्षी उड़ते नज़र आते हैं मानो ऋतुराज वसंत का स्वागत कर रहे हों। सब के मन में नया उत्साह, उमंग तथा नई स्फूर्ति जागृत हो जाती है। वसंत ऋतु में खुले स्थानों, पर्वतों, जंगलों में नज़ारा अद्‌भुत होता है। इस ऋतु में खाना अधिक न खाकर फल, खट्टे और नमकीन पदार्थ ज़्यादा अच्छे लगते हैं। इस समय ये स्वास्थ्य के लिए भी अधिक लाभकारी होते हैं।

वसंत के अद्‌भुत सौंदर्य को देखकर कवियों ने इसे अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया है। कवि 'देव' ने भी अपनी रचनाओं में वसंत को कामदेव रुपी राजा का शिशु कहा है, जिसे प्रकृति पालना झुलाती है।

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,

सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।

पवन झूलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',

कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै।।

पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,

कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।

मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,

प्रताहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

इन दिनों में सूर्य की उष्णता भी अधिक नहीं होती है। मौसम सुहावना एवं मनभावन होता है। इस ऋतु में ही वसंत पंचमी, होली, बैसाखी जैसे पर्वों को मनाया जाता है। ये त्योहार वसंत ऋतु की खुशहाली, प्रसन्नता और सम्पन्नता को कई गुना बढ़ा देते हैं।

वसंत पंचमी वसंत के आगमन का ही त्योहार है। इस दिन लोग ज्ञान की देवी सरस्वती की भी पूजा करते हैं। वे पीले रंग के वस्त्र धारण कर जीवन को देवी के आशीर्वाद से परिपूर्ण कर लेते हैं।

विज्ञान

'विज्ञान' आज के युग का सबसे बड़ा चमत्कार है। इसके कारण ही मानव जीवन सुविधापूर्ण हो पाया है। जिधर नज़र डाल लीजिए उधर इसके रूप नज़र आ जाएँगे। आज का युग विज्ञान का युग है। इसने अपने आविष्कारों से मनुष्य की काया ही पलट दी है। आज जितना विज्ञान का बोलबाला है शायद ही किसी और का होगा। आज हर सुविधा मनुष्य के कदमों पर है।

कुछ घंटे में हज़ारों मील दूर रहने वाले किसी अपने के पास जा सकते हैं। चाँद की यात्रा कर सकते हैं।

अन्य ग्रहों और तारों की तस्वीरें पृथ्वी में बैठे-बैठे खींच सकते हैं। मनुष्य ने समुद्र का सीना चीर के विशाल सेतु खड़े कर दिए हैं। आज मनुष्य ने विज्ञान के कारण ही आकाश, पाताल और धरती पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया है।

एक समय था जब महामारियों के कारण बस्ती की बस्तियाँ उजड़ जाती थीं। बीमारी के कारण ही हज़ारों मनुष्य काल का ग्रास बन जाते थे। विज्ञान के कारण ही उन बीमारियों को जड़ से उखाड़ा जा सका है।

आज मनुष्य ने हैजा, प्लेग, चेचक जैसी बीमारियों को जड़ से उखाड़ फेंका है। चिकित्सा के क्षेत्र में चमत्कारी क्रांति विज्ञान के कारण ही संभव हो पाई है। विज्ञान की एक यही देन नहीं है। प्राचीनकाल में मनुष्य अपने मनोरंजन के लिए संगीत, नृत्य, नृत्यनाटिका, खूनी खेल प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रमों पर निर्भर रहा करता था।

परन्तु आज वह घर बैठे ही टीवी के माध्यम से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम एक ही समय में देख सकता है। उसने टीवी और रेडियो के माध्यम से दुनिया को एक कमरे में कैद कर लिया है। कंप्यूटर उसके इस युग की सबसे बड़ी देन है। पूरी दुनिया जैसे इसके अंदर समाहित हो गई है। अब घर बैठे आप हज़ारों मील रहने वाले किसी अपने से बातचीत कर सकते हैं।

पत्र के इतंज़ार में उसे कई-कई दिनों तक आस लगाए रहने की आवश्यकता नहीं है। बस एक मेल किया और कुछ क्षणों में हालचाल जान लिया। हमारे जीवन में छोटी से छोटी वस्तु कहीं न कहीं विज्ञान का ही आविष्कार है। विज्ञान हमारे लिए ऐसा वरदान है, जिसने हमारे जीवन को सुखमय बना दिया है।

यह बात भी सत्य है कि वरदान का यदि दुरुपयोग किया जाए, तो उसे अभिशाप बनते देर नहीं लगती है। हमने इसका प्रयोग अपने जीवन को सभी सुविधाओं से युक्त और सुखमय बनाने के लिए किया। हम यह भुल गए कि इसकी सहायता से जो आविष्कार हमारे द्वारा किए गए हैं, उनका बिना-सोचे समझे किया गया प्रयोग हमारे आने वाले भविष्य को संकट में डाल रहा है।

आज हर तरह का प्रदूषण इन आविष्कारों की देन है। वाहनों ने वायु और ध्वनि प्रदूषण को बढ़ाया है। मनुष्य की प्रगति ने पृथ्वी का नाश किया है और रहा सहा जो बचा है, हमारे द्वारा विध्वंस करने वाले संहारक अस्त्रों को बनाकर पूरा कर लिया गया है।

ये हथियार मनुष्यता की रक्षा के स्थान पर मनुष्य के नाश का साधन मात्र बनकर रह गए हैं। हमें चाहिए कि ऐसे प्रयास करें कि विज्ञान को अभिशाप के स्थान पर वरदान ही बने रहने दिया जाए।

विज्ञान मनुष्य के लिए वरदान है। इसका प्रयोग मानवता के लिए किया जाए, तभी तक यह महत्वपूर्ण है। नहीं तो इसकी उपयोगिता मानवता के लिए नग्न है। हमें चाहिए कि इसका प्रयोग सोच-विचार कर करें।

ऐसे आविष्कारों के निर्माण और खोज पर प्रतिबंध लगा दिया जाएँ, जो पूरी मानव जाति के लिए घातक सिद्ध हों। मानव जाति के कल्याण के लिए ही इसका उपयोग किया जाए। ऐसा करने से यह बहुमूल्य वरदान फलीभूत होगा और हम इसका भरपूर लाभ उठा सकेंगे।

विद्यार्थी और नैतिक मूल्य

विद्या हर मनुष्य के लिए ऐसी अमूल्य धरोहर है, जो जीवन मार्ग पर हर कदम में उसके काम आती है। यह धन किसी के द्वारा न चुराया जा सकता है, न खराब किया जा सकता है। जिस तरह एक विद्यार्थी के लिए शिक्षा आवश्यक है, उसी तरह उसके अंदर नैतिक मूल्यों का होना भी बहुत आवश्यक है।

हर धर्म का भी एक ही निचोड़ है कि मनुष्य में नैतिक शिक्षा होना परम आवश्यक है और इसका आंरभ उसके विद्यार्थी जीवनकाल से हो जाता है। सब पर दया रखना, कभी झूठ नहीं बोलना, बड़ों का आदर करना, दुर्बलों को तंग न करना, चोरी न करना, हत्या जैसा कार्य न करना, सच बोलना, सबको अपने समान समझते हुए प्रेम करना, सबकी मदद करना, किसी की बुराई न करना आदि कार्य नैतिक शिक्षा या नैतिक मूल्य कहलाते हैं। सभी धर्म ग्रंथों का यही उद्देश्य रहा है कि मनुष्य में इन गुणों का विकास हो ताकि वह स्वयं को और मानवता को सही रास्ते में ले जा सके।

एक बच्चे कोघर से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा मिलने लगती है। विद्यालय में प्रवेश लेने के पश्चात नैतिक मूल्यों की शिक्षा सही मायने में आरंभ हो जाती है। जैसे-जैसे उसकी शिक्षा का स्तर बढ़ता जाता है। उसके मूल्यों में विस्तार होने लगता है। ये मूल्य उसे सिखाते हैं कि उसे समाज में, बड़ों के साथ, अपने मित्रों के साथ व अन्य लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए।

पुस्तकों में कहानियों और महत्वपूर्ण घटनाओं के माध्यम से उसके मूल्यों को संवारा और निखारा जाता है। बच्चा एक ऐसी गीली मिट्टी के समान होता है, जिसे जैसा रूप दे दिया जाए, उसका स्वरूप वैसा ही बन जाता है। यदि एक देश का विद्यार्थी नैतिक मूल्यों से रहित होगा, उस देश का कभी विकास नहीं हो सकता। हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार नैतिक मूल्यों से रहित मनुष्य पशु के समान होता है।

नैतिक मूल्य विद्यार्थियों को बड़ी-बड़ी कंपनी में नौकरी न दिला सकें परन्तु उसको जीवन मार्ग में विकास करने के लिए राह अवश्य सुझा सकते हैं। दूसरों के ह्दय में विशिष्ट स्थान दिलवा सकते हैं। उसे एक बेहतर इनसान और एक अच्छा बेटा/बेटी अवश्य बना सकते हैं। लेकिन विडंबना है कि ये नैतिक मूल्य हमारे जीवन से धूंधले हो रहे हैं।

हमारी शिक्षा प्रणाली से नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। क्योंकि इनमें नैतिक शिक्षा को स्थान नहीं दिया जा रहा है। शिक्षा हमें प्रगति के चरम पर तो अवश्य पहुँचा सकती है परन्तु उस शिक्षा का क्या लाभ, जो हमें मनुष्य के स्थान पर पशु के समान व्यवहार करना सिखाए। ऐसी शिक्षा धन, ऐश्वर्य, वैभव और संसार की समस्त सुख-सुविधाएँ तो दे सकती है परन्तु मानवता के गुण नहीं दे सकती है।

इस कमी को हमें स्वयं दूर करना है। व्यक्तिगत चरित्र तथा राष्ट्रीय बल प्राप्त करने के लिए हमें नैतिक शिक्षा को हमारी शिक्षा प्रणाली में स्थान देना पड़ेगा। वरना वह दिन दूर नहीं जब समाज में अराजकता व अशान्ति के सिवाए कुछ नहीं होगा। यह तभी संभव है, जब हम अपने विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का समावेश करेगें। उन्हें अच्छा इंसान बनाने के लिए हमें उनमें नैतिक मूल्यों रूपी रक्त प्रवाहित करवाना ही पड़ेगा।

इन मूल्यों के कारण मानवता अभी तक जीवित है। हमें इनकी उपयोगिता समझते हुए इनको शिक्षा में

विशेष स्थान देना चाहिए। वरना इनकी कमी से मानवता का नाश हो जाएगा। यह हमारे लिए श्रेयकर नहीं होगा।

विद्यालय का सांस्कृतिक कार्यक्रम

हमारे विद्यालय में कुछ दिन पहले रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया था। इससे पहले हमारे विद्यालय में शायद ही कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ हो। आज भी उस कार्यक्रम का स्मरण आते ही हृदय प्रसन्नता से भर जाता है। प्रधानाचार्य जी द्वारा प्रार्थना सभा में घोषण की गई कि एक जनवरी को हमारे विद्यालय में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

सभी विद्यार्थियों को यह निर्देश दे दिए गए कि जो विद्यार्थी इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए इच्छुक हैं, वे अपनी मुख्य अध्यापिका को अपने नाम लिखवा दें। सबको इस बात के भी निर्देश दिए गए थे कि सभी विद्यार्थी घर से कुछ न कुछ सजाने के लिए अपने हाथों से बनाकर लाएँगे व इस कार्यक्रम में अपना योगदान देंगे।

समारोह से पन्द्रह दिन पहले से ही हमारे विद्यालय में इस आयोजन की तैयारियाँ आरम्भ हो गईं। संस्कृत के अध्यापक नारायण शास्त्री को सर्वसम्मति से प्रभारी (इंचार्ज) नियुक्त किया गया। समारोह का सारा कार्यभार उन पर आ पड़ा। सभी कक्षाओं के मुख्य अध्यापकों/अध्यापिकाओं ने कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देने के इच्छुक छात्रों व छात्राओं की सूची उन्हें सौंप दी। नारायण जी ने उन बच्चों को एकत्र कर उन्हें उनके कौशल के आधार पर अलग-अलग कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने के लिए बाँट दिया।

उन्होंने कुछ विद्यार्थियों को नृत्य प्रस्तुत करने के लिए और कुछ विद्यार्थियों को नृत्य-नाटिका के लिए तैयार किया। उन्होंने विद्यालय में चित्रकला प्रतियोगिता व निबंध प्रतियोगिता भी रखी, जिसमें सभी छात्र/ छात्राएँ भाग ले सकें। शास्त्री जी ने कुछ विद्यार्थियों को समारोह में उनके साथ समारोह का कार्यभार संभालने के लिए नियुक्त किया व कुछ छात्राओं को अतिथियों का स्वागत करने के लिए नियुक्त किया।

रंगारंग कार्यक्रम का दिन आ पहुँचा। उस समारोह के लिए हमारे क्षेत्र के जिला अध्यक्ष को आंमत्रित किया गया था। बच्चों द्वारा बनाई गई साज-सज्जा की चीजों से स्कूल को सजाया गया। चारों तरफ फूलों की मालाएँ व रंग-बिरंगे कागज़ के रिबन लगाए गए। समारोह स्थल में एक ऊँचा व बड़ा मंडप बनाया गया। अतिथियों के लिए कुर्सियाँ व टेबलों को लगाया गया।

नियत समय पर कार्यक्रम आरम्भ हो गया। जिला अध्यक्ष के आते ही उनके स्वागत के लिए अभिनन्दन गीत गाया गया, जिसे बहुत ही मीठे सुरों से सँवारा गया था। उसके बाद रंगारंग कार्यक्रम का सिलसिला प्रारम्भ हो गया। सर्वप्रथम अभिज्ञानशाकुन्तलम् पर आधारित नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसका आकर्षण व हिन्दी रूपान्तर देखते ही बनता था। सभी दर्शकों ने इस नृत्य-नाटिका की सराहना की।

लोकनृत्य करने वाले छात्र-छात्राओं ने रंग-बिरंगे सुन्दर परिधान पहने हुए थे, जिनकी छटा अलग ही बिखर रही थी। जब पंजाब का लोकनृत्य प्रस्तुत किया गया, तो सारे दर्शकों में उल्लास व रोमांच का वातावरण बिखर गया। गढ़वाल के लोकनृत्य को प्रस्तुत करती हुईं लड़कियाँ एक दूसरे के कमर में हाथ डालते हुए ताल से ताल मिलाते हुए, बड़ी मोहक लग रही थीं। एक के बाद एक सभी राज्यों के लोकनृत्य प्रस्तुत किए

गए। हरियाण व राजस्थानी नृत्य ने तो ऐसा समा बाँधा कि दर्शक भी नृत्य करने पर विवश हो गए। नृत्य करने वाले विद्यार्थियों के मुख आनन्द व उल्लास से दमक रहे थे।

लोकनृत्यों ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया। नृत्य के समाप्त होते ही चित्रकला प्रतियोगिता आरम्भ हुई। चित्रकला केवल छोटी कक्षा के छात्र-छात्राओं के लिए थी, जिसमें छठी कक्षा के छात्र ने गाँधी जी का चित्र बनाकर जीत ली। निबंध प्रतियोगिता में सारे विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया, जिसमें आठवीं कक्षा के विद्यार्थी ने जीतकर दिखाया।

प्रतियोगिताओं के समाप्त होने पर मुख्य अतिथि ने सर्वश्रेष्ठ नृत्य के लिए पंजाब की नृत्य मंडली को प्रथम पुरस्कार दिया। नृत्य-नाटिका को द्वितीय व राजस्थानी नृत्य को तृतीय पुरस्कार दिया गया। चित्रकला व निबन्ध प्रतियोगिता के नाम घोषित किए गए और उन्हें भी मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरित किए।

इस प्रकार बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम ने सारे दर्शकों का मन मोह उस समारोह को और भी रंगारंग बना दिया। विद्यालय के सभी अध्यापकों व विद्यार्थियों ने इस समारोह का आनन्द लिया। इस समारोह में शास्त्री जी की कार्यकुशलता को खुब सहारा गया। ये समारोह आज भी मुझे बहुत याद आता है। उस आनन्द को भुलना मेरे लिए सम्भव नहीं है।

विषम परिस्थितियों में दृढ़ आत्मविश्वास का परिचय

हमारे जीवन में अचानक ही कुछ ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं, जो मानस पटल पर हमेशा के लिए अंकित हो जाती हैं। इन घटनाओं की छाप हमारे जीवन में इस प्रकार पड़ती हैं कि हमारी स्वयं की स्थिति उस समय अस्त-व्यस्त हो जाती है। ऐसा लगता है मानो दिमाग चेतना शून्य हो गया है और सोचने-समझने की शक्ति क्षीण हो गई है। उस स्थिति को यदि जल्दी ही काबू में न लाया जाए, तो कुछ का कुछ हो जाता है।

यहीं पर मनुष्य की बुद्धिमानी एवं धैर्य का परिचय देखा जाता है। ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ। उस घटना को मैं कभी नहीं भूल सकती क्योंकि यह ऐसी पहली घटना थी, जिसने मुझे घोर निराशा भी प्रदान की और उससे लड़ने के लिए मार्गदर्शन भी किया। इसके पश्चात् मैंने कई बार मुश्किल समय का सामना किया परन्तु वे मेरे आत्मविश्वास को तोड़ नहीं पाए।

बात उन दिनों की है, जब मैंने दसवीं की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। मैं हमारे घर के समीप नगर पालिका के विद्यालय में पढ़ती थी। पिताजी मेरे लिए उज्ज्वल भविष्य चाहते थे। हमारे विद्यालय में विज्ञान विषय का अभाव होने के कारण मेरा वहाँ पढ़ना अब संभव नहीं था। पिताजी ने मन बना लिया था कि वह मुझे दिल्ली के केन्द्रीय विद्यालय में प्रवेश दिलवाएँगे। ऐसा करने से मुझे मेरे मनोवांछित विषय प्राप्त हो जाते और मैं अपनी पढ़ाई को बिना किसी विघ्न के पूरा कर पाती।

विद्यालयों में प्रवेश की समय सीमा 1 जून से 20 जून तक रखी गई थी। पिताजी ने समय न गँवाते हुए निश्चित किया कि 1 जून को मैं और पिताजी सभी प्रमाण पत्र सहित घर से निकल पड़ेंगे क्योंकि विद्यालय हमारे घर से दूर था। एक जून को हम विद्यालय जाने के लिए घर से निकल पड़े। इसके लिए हमने बस का चयन किया। सुबह का समय कार्यालय व स्कूल जाने का समय होता है इसलिए हमें बस के अंदर भीड़ में काफी संघर्ष करना पड़ा। जैसे-तैसे मैं और पिताजी विद्यालय जा पहुँचे। विद्यालय पहुँचकर हमें दाखिला-

पत्र भरने के लिए दिया गया। पिताजी द्वारा दाखिला-पत्र की अधिकतर औपचारिकता पूरी कर दी गई थी। विद्यालय में क्लर्क ने दाखिला-पत्र के साथ 10वीं का प्रमाण-पत्र माँगा, तो हमें याद आया कि हमारे पास प्रमाण-पत्र का थैला नहीं था। बस की भीड़-भाड़ में वह थैला बस में ही छूट गया था। विद्यालय पहुँचने की जल्दी में हमें इस बात का स्मरण ही नहीं रहा कि प्रमाण-पत्र की फ़ाइल हमारे हाथ से गिर गई है।

पिताजी और मैं वहीं कुछ क्षण तक हैरान, परेशान खड़े रहे। हमें कुछ सूझ ही नहीं रहा था कि हम आगे क्या करें। मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। पिताजी ने संयम से काम लिया और प्रधानाचार्य से बात करने चले गए। प्रधानाचार्य को उन्होंने स्थिति की गंभीरता से अवगत कराया परन्तु वह कुछ मानने और सुनने के लिए तैयार नहीं हुए।

पिताजी द्वारा बहुत अनुनय-विनय करने पर उन्होंने इस शर्त पर दाखिले के लिए स्वीकृति दी कि यदि आपकी पुत्री मेरे सम्मुख दुबारा से 10 कक्षा के गणित और विज्ञान दोनों विषयों के प्रश्न-पत्र हल कर देगी, तो वह मुझे दाखिला दे सकते हैं। साथ में 10 दिनों के अंदर सभी प्रमाण-पत्र जमा करवाने के लिए कहा।

पिताजी ने मुझे प्रधानाचार्य जी के द्वारा कही बात बताई व हिम्मत बंधाई कि मुझे इसी समय दुबारा से दोनों विषयों के प्रश्न-पत्रों को हल करना पड़ेगा। एक बार के लिए मेरा आत्मविश्वास टूट गया था कि मैं कैसे इन विषयों के प्रश्न-पत्रों को हल करूँगी। निराशा जैसे मेरे मस्तिष्क में बढ़ती जा रही थी पर पिताजी के द्वारा दिए आत्मविश्वास ने मेरे अंदर नई शक्ति का संचार किया।

मेरे द्वारा दोनों प्रश्न-पत्र हल कर दिए गए और प्रधानाचार्य ने मेरी तीक्ष्ण बुद्धि व आत्मविश्वास की खूब प्रशंसा की और मुझे विद्यालय में दाखिला मिल गया। पिताजी ने भागदौड़ कर सी.बी.एस.ई. बोर्ड से मेरे प्रमाण-पत्रों की नई प्रतिलिपि बनवाई और विद्यालय में जमा करवा दी। यदि उस समय मैंने हिम्मत छोड़ दी होती, तो शायद ही मैं उस मुसीबत से निकल पाती।

इस घटना ने मुझे यह सीख दी कि विषम परिस्थितियों में संयम बनाए रखना आति आवश्यक होता है। ऐसा करने से मनुष्य आई विपदा का सामना कर पाता है और जीवन में व्याप्त कठिनाइयाँ उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाती हैं। इसके लिए आवश्यक है संयम बनाए रखिए, स्वयं पर विश्वास रखें और दृढ़ता के साथ मुसीबत का सामना करें।

वृक्षारोपण

पृथ्वी हमारा निवास-स्थान है। हमारे जीवन में इसकी उपयोगिता एक माँ के समान है। भारत में तो इसे माँ की ही संज्ञा दी गई है। धरती माँ की भांति हमारा पालन-पोषण करती है। हमारी हर छोटी-बड़ी आवश्यकताओं को पूरा करती है। हम उसके बालक के समान हैं। इस पृथ्वी का महत्वपूर्ण अंग है वृक्ष। इनके माध्यम से हमारी बहुत-सी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। वृक्ष, पृथ्वी माँ की तरफ़ से दी गई अमूल्य धरोहर है।

वृक्षों से होने वाले लाभों का यदि आंकलन किया जाए, तो वे अद्वितीय हैं। वृक्ष मनुष्य के लिए जीवनदायनी ऑक्सीजन का निर्माण करते हैं। वे वातावरण मैं विद्यमान कार्बनडाई ऑक्साइड को ग्रहण कर ऑक्सीजन विसर्जित करते हैं। इस तरह ये वातावरण को शुद्ध बनाते हैं। वातावरण से हानिकारक गैस कार्बनडाई

ऑक्साइड को ग्रहण करने के कारण वायु और वातावरण शुद्ध हो जाता है। कार्बनडाई ऑक्साईड की अधिकता के कारण वातावरण का तापमान बढ़ता है। अत:ये पृथ्वी के कार्बनडाई ऑक्साइड का अवशोषण कर तापमान को नियंत्रण करने का कार्य भी करते हैं। मनुष्य की भोजन, औषधी, वस्तु निर्माण संबंधी आदि आवश्यकताओं को भी पूरा करते हैं। वृक्षों की पत्तियों से अच्छी खाद बनाई जाती है।

इनसे प्राप्त होने वाली लकड़ी को ईंधन के रूप में जलाया जाता है। इस लकड़ी से विभिन्न तरह के फर्नीचरों का निर्माण भी किया जाता है। वृक्षों का महत्वपूर्ण कार्य होता है मिट्टी के कटाव को रोकना। वृक्षों की जड़ें धरती में बहुत गहराई तक होती हैं। वे अपनी जड़ों से मिट्टी को बाँधे रखते हैं। इसके कारण बरसात के समय मिट्टी (मृदा) का कटाव नहीं होता और उपजाऊ मिट्टी का संरक्षण हो जाता है।

वृक्ष हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। परन्तु हम यह सब जानते हुए भी अपने स्वार्थों के लिए इनकी अंधाधुंध कटाई कर रहे हैं। हमें अपने घरों, खेतों और वस्तु निर्माण संबंधी आवश्यकताओं के लिए इनका प्रयोग कर रहे हैं। हम इनकी कटाई जितनी तेज़ी से कर रहे हैं, उतनी तेज़ी से हम अपनी जड़ें भी काट रहे हैं। हम यह भूल जाते हैं कि हमारा जीवन इन पर निर्भर है। यदि यही कट गए, तो हमारा जीवन कैसे जीवित रहेगा।

वृक्षों के कटाव के कारण आज भंयकर स्थिति उत्पन्न हो गई है। वायुमण्डल में प्रदूषण की मात्रा बढ़ रही है। यह प्रदूषण मनुष्य के लिए हानिकारक हो गया है। इस प्रदूषण के कारण वायुमण्डल का तापमान लगातार बढ़ रहा है। ध्रूवों में स्थित बर्फ भी इसी कारण लगातार पिघल रही है। यह बर्फ जहाँ हमारी पीने की आवश्यकता को पूरा करती हैं। वहीं यदि यह पिघल जाए, तो समुद्रतल को बढ़ा सकती है, जिससे प्रलय की स्थिति बन सकती है। इन सब समस्याओं को देखते हुए वृक्षों की उपयोगिता पर हमारा ध्यान केंद्रित होता है।

वृक्ष हमारे लिए ही नहीं अपितु समस्त मानवजाति के लिए महत्वपूर्ण है। हमें चाहिए की वृक्षों के महत्व को समझें। स्वयं और अन्य लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें। वृक्ष बिना हमारा जीवन असंभव है। हमें चाहिए की वृक्षों की कटाई को सख्ती से रोका जाए। सरकार ने भी इस ओर ध्यान देना आंरभ कर दिया है। परन्तु सरकार को चाहिए की इसके लिए और भी कड़े कानून बनाएँ।

अधिक पेड़ों को लगाया जाए। कई सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा वृक्षारोपण पर ज़ोर दिया जा रहा है। सरकार भी समय-समय पर वृक्षारोपण कार्यक्रमों को करवाती है। ग्रामीण लोगों में भी इस ओर जागरूकता पैदा की जा रही है। हमें स्वयं भी इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। यह मात्र सरकार का कर्तव्य नहीं है, इस ओर हमारा भी कर्तव्य बनता है क्योंकि यह पृथ्वी भी हमारा घर है।

शिक्षा का व्यवसायीकरण

'शिक्षा'शब्द का अर्थ है- अध्ययन तथा ज्ञान ग्रहण करना। वर्तमान युग में शिक्षण के लिए ज्ञान, विद्या, एजूकेशन आदि अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है। शिक्षा चेतन या अचेतन रूप से मनुष्य की रूचियों समताओं, योग्यताओं और सामाजिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए, आवश्यकता के अनुसार स्वतंत्रता देकर उसका सर्वागींण विकास करती है।

शिक्षा उसके आचरण को इस प्रकार परिवर्तित करती है, जिससे शिक्षार्थी और उसके समाज दोनों की

प्रगति होती है। ज्ञान से मस्तिष्क में विचारों का जन्म होता है। उसके जन्मजात गुणों का विकास होता है। आज शिक्षा का व्यापक रूप देखने को मिलता है।

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली बिट्रिश शिक्षा प्रणाली पर आधारित है। आज की शिक्षा प्रणाली ज्ञान मंदिर के स्थान पर अज्ञानता से उत्पन्न कलुष का केन्द्र बनकर रह गई है। इसका कारण है शिक्षा का व्यवसायीकरण। यह मनुष्य को बिना सींग और पूँछ का पशु बनाने का काम कर रही है।

आज की शिक्षा राजनीतिक पहुँच का मानदंड हो गई है। ऐसे में शिक्षा का स्तर क्या हो सकता है? भ्रष्टाचार का बोलबाला इतना अधिक है कि शिक्षा एक व्यवसाय बन कर रह गई है। शिक्षा पर खर्च होने वाला व्यय कुछ अधिकारियों में और कुछ नौकरशाहियों में बँट जाता है। बची राशि आसमान छूने जैसी बात बनकर रह जाती है।

शिक्षा सभाओं में धर्म निरपेक्षता की बात होती है। शिक्षण संस्थाओं में अध्यक्ष प्राय: राजनीतिज्ञ होते हैं, जिनका शिक्षा से कुछ सम्बन्ध नहीं होता। इसका परिणाम; नियुक्तियों व पाठयक्रम राजनीतिक दृष्टिकोण से होते हैं। इसलिए यहाँ अनुशासनहीनता भी शुरू हो जाती है।

शिक्षक जो शिक्षा का रीढ़ है, वह ही खुद विद्यार्थी को अपने थोड़े से स्वार्थ के लिए शिक्षा विहीन छोड़ देता है, तो देश के आगामी युवा कैसे होगें, इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

अनेक शिक्षक केवल पैसा कमाने जाते हैं। देश और विद्यार्थियों से उनको कोई सरोकार नहीं होता। अध्यापन से उनका कोई नाता नहीं होता। नियुक्तियों के समय पैसे-को महत्त्व दिया जाता है। इसी कारण शिक्षक ऐसे होते हैं, जिन्हें न तो विषय का ज्ञान होता है और न ही शिक्षा देना आता है।

पब्लिक स्कूलों में जहां शिक्षा का स्तर ऊँचा माना जाता है। वहाँ धन लोलुपता के कारण फीस की अधिकता के साथ पुस्तकों का बोझ, गधे के बोझ से कम नहीं होता।

इनका उद्देश्य भी शिक्षा के स्थान पर अधिक-से-अधिक धन कमाना होता है। एन सी. ई. आर. टी. की पुस्तकों को बहुत खर्च करके विद्वज्जनों की बैठकों के बाद बनाया जाता हैं, जिसमें अनेकों गलतियाँ होती हैं।

इन गलतियों को नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता। साथ ही परीक्षा-पत्र व मूल्यांकन पद्धति भी एक कारण है, शिक्षा के व्यवसायीकरण का। नेताओं के सरंक्षण में पल रहे शिक्षक व शिक्षण सस्थाएँ शिक्षा के कर्णधार माने जाते हैं। वे शिक्षा और देश की प्रतिभा को गिराए या उठाए उनको कोई आँच नहीं आ सकती।

इसको रोकने का उपाय है, वातावरण शिक्षामय हो, शिक्षित और शिक्षक अनुशासन पूर्ण हो, पाठ्यक्रम में सुधार हो, शिक्षण, शिक्षक और अनुशासन पूर्ण हो, पाठ्यक्रम में सुधार हो, शिक्षण सस्थांओं में शिक्षा ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हो, सिफारिश के स्थान पर योग्यता को महत्त्व दिया जाए। यदि हमने इस ओर ध्यान नहीं दिया, तो शिक्षा धन की लोलुपता में दबकर रह जाएगी।

समय का सदुपयोग

समय का हमारे जीवन से महत्त्वपूर्ण रिश्ता है। जब मनुष्य का जन्म होता है, तब से समय सदैव उसके साथ बना रहता है। अंत समय पर ही उसका समय के साथ संबंध समाप्त हो पाता है। यद्यपि मनुष्य जन्म लेते हैं और मर जाते हैं। परन्तु समय निरंतर शांत और निश्चल भाव से बिना किसी भेद-भाव के अपनी धूरी पर चलता रहता है। समय का कार्य मात्र वर्षों व दिनों को दर्शाने तक सीमित नहीं है। वह यह भी दिखाता है कि हमने अपने जीवनकाल में उसका (समय) सदुपयोग किया है या दुरुपयोग।

इस संसार में अरबों की संख्या में मनुष्य रहते हैं पर उनमें से कुछ ही समय का सदुपयोग कर उन्नति प्राप्त करते हैं। सभी मनुष्यों के लिए यह संभव नहीं होता क्योंकि वे अपने समय का मूल्य न जानकर उसका सदुपयोग नहीं कर पाते और उसका अपव्यय करते रहते हैं। वे अपने संपूर्ण जीवन में इसी दु:ख से पीड़ित रहते हैं कि उन्होंने समय पर कुछ नहीं किया। संतजनों ने सही कहा है-

"अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।"

यदि समय को सही तरह से व्यवस्थित किया जाए, तो अपने जीवन को एक नई दिशा दी जा सकती है। ऐसे कई उदाहरण हम स्वयं के जीवन में देख सकते हैं, जब एक क्षण की देरी से हमें कई महत्त्वपूर्ण अवसरों से हाथ धोना पड़ा हो। किसी कार्य को करने के लिए लापरवाही नहीं दिखानी चाहिए। ज़रा सी लापरवाही सारी मेहनत पर पानी फेर सकती है। इससे समय तो बर्बाद होता ही है, साथ में जो मेहनत बर्बाद होती है वो अलग।

हमें चाहिए कि हम समय का सदुपयोग करें। हर कार्य को निश्चित समय पर या पहले समाप्त करें ताकि बचें हुए समय में हम अपने अन्य कार्यों को पूरा कर सकें। तालिका बनाकर विभिन्न कार्यों को करने के लिए समय निश्चित करें और उसी कार्य-तालिका के अनुसार कार्य को कार्यन्वित करें। यदि हम समय को सम्मान देंगे, तो वह बदले में उतना ही फल देगा। हमें चाहिए कि हम अपने खाली समय का ऐसा उपयोग करें, जिससे वह बर्बाद न होकर हमारे लिए उपयोगी बन जाए।

सर्वप्रथम हम ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ सकते हैं। सभाओं और विचार-गोष्ठियों में जा सकते हैं। चित्रकला, संगीत या अन्य कोई कला सीख सकते हैं। पूरक परीक्षा में भाग ले सकते हैं। बड़ों की सहायता हेतु कार्य कर सकते हैं। हमारा मुख्य उद्देश्य होना चाहिए समय की बर्बादी पर रोक। अपने जीवन में हमें समय का पाबंद बनना चाहिए।

एक विद्यार्थी के जीवन में समय का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। एक-एक पल उसके द्वारा व्यवस्थित होना चाहिए। उसे अपने खाने-पीने, खेलने, पढ़ने, सोने आदि के लिए एक तालिका का निर्माण करना अति आवश्यक है। यदि वह अपने समय को व्यवस्थित न कर यूहीं समय बर्बाद करता रहेगा, तो कभी भी अपनी परीक्षा संबंधी तैयारी समय पर समाप्त नहीं कर पाएगा और फलस्वरुप उसे परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी। इसी बात पर रहीम जी ने कहा है,

समय लाभ सम लाभ नहिं, समय चूक सम चूक।

चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक।।

अर्थात् वही लोग जीवन में उन्नति और विकास प्राप्त करते हैं, जो अपने समय का मूल्य पहचानते हैं। हमें समय की माँग के अनुसार अपने समस्त कार्यों को पूरा करना चाहिए। एक पल को भी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। विद्यार्थी काल से ही समय की उपयोगिता पर ध्यान देकर अपने कार्यों को किया जाए, तो समय संपूर्ण जीवन में हमारे विपरीत न जाते हुए हमारे समक्ष चलने लगता है। टाटा, बिड़ला, सचिन तेंदुलकर, रोहित बहल, संजीव कपूर, धनराज पिल्लै आदि अनेक नाम हैं, जिन्होंने समय के सही उपयोग से ही सफलता अर्जित की है।

मनुष्य अपने जीवनकाल में बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था तक तक की यात्रा तय करता है। ये तीनों अवस्था समय के होने व उसके व्यतीत होने का प्रमाण हैं और हमें यह याद दिलाते हैं कि समय कभी किसी के लिए नहीं ठहरता बल्कि अपनी गति से चलता रहता है।

हमें इस बात को सदैव गाँठ बाँधकर कर रख लेना चाहिए कि गया हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। यदि इस बात को स्मरण कर समय का सदुपयोग किया जाए, तो सफलता हमारे कदम चूमेगी। "समय की कद्र" यही हमारा गुरुमंत्र होना चाहिए। हमें अपने जीवन में समय के महत्व को समझते हुए, इसका उपयोग करना चाहिए।

स्त्री और नौकरी

स्त्री समाज का आधार होती है। एक समाज के निर्माण में स्त्री की मुख्य भूमिका होती है। हमारे ग्रंथों में स्त्री को संसार की जननी कहा गया है। उसे देवी की तरह पूजा जाता है और उसका आदर किया जाता है। धर्म ग्रंथों में स्त्री को पुरूष की सहधर्मचारिणी कहा गया है। वह उसके धर्म आदि कार्यों में बराबर का सहयोग करती है। उसे पुरूषों के समान ही जीवन का मज़बूत आधार स्तंभ माना गया है।

शिक्षा ने स्त्री की परिभाषा बदलकर रख दी है। पहले स्त्री को अबला माना जाता था। परन्तु आज की स्त्री अबला नहीं है। हर क्षेत्र में उसने सफलता के झंडे गाड़ दिए हैं। वह आज नौकरी करने लगी है। हर क्षेत्र में उसकी योग्यता को सराहा जाता है। नौकरी के साथ आज वह अपना परिवार भी बहुत अच्छी तरह से संभाल रही है। बीते समय में स्त्री का घर से निकलकर नौकरी करना बहुत बुरा माना जाता था।

आज भी उसे घर में रखी वस्तु के समान ही समझा जाता है। आज बेटों के स्थान पर वह पूरी निपुणता के साथ घर की ज़िम्मेदारियाँ संभाल रही है। नौकरी ने उसके अस्तित्व को सम्मान और गौरव दिया है। वह किसी पर आश्रित नहीं है। आत्मविश्वास से भरी हुई मिसाल है। अपने कार्यक्षेत्र को वह उतनी ज़िम्मेदारी के साथ निभा रही है, जितनी ज़िम्मेदारी के साथ घर-परिवार संभाला करती थी।

एक समय था, जब उसकी दशा दीन-हीन थी। उसे घर की शोभा समझा जाता था। घर की चारदीवारी उसकी समस्त दुनिया हुआ करते थे। पति और बच्चों में अपने अस्तित्व को ढूँढती हुई वह कब मर जाती थी, किसी को पता ही नहीं चलता था। उससे यही आशा की जाती थी कि वह घर को संभाले और उसे अपना सर्वस्व माने। घूघंट में लिपटी हुई स्त्री, जिसे सदैव पुरूष रूपी सहारे की आवश्यकता होती थी। पुरूष द्वारा उसे प्रताड़ित किया जाता रहा और वह निरीह गाय की तरह अत्याचार सहती रहती थी। समय

बदला 'नारी शिक्षा'आंदोलन ज़ोर पकड़ने लगे। धीरे-धीरे समाज को इस बात का आभास हुआ कि स्त्री का शिक्षित होना समाज के विकास के लिए अति आवश्यक है। स्त्री के विकास में जैसे शिक्षा ने नए पंख ही लगा दिए। जहाँ वह शिक्षित होने लगी, उसे अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता आने लगी। अपने अस्तित्व को उसने शिक्षा के माध्यम से पहचाना आरंभ किया।

धीरे-धीरे उसने परिवार की आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए नौकरी आरंभ की। लेकिन अब वह स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए नौकरी कर रही है। उसने इस धारणा को खण्ड-खण्ड कर दिया है कि पुरूषों के समान स्त्रियाँ अपने कार्यक्षेत्र को संभाल नहीं सकती हैं।

आज वह हर क्षेत्र में नौकरी कर सफलता के झंड़े गाड़ रही है। सेना से लेकर रेल विभाग में इंजन चलाने का कार्य हो, वह पुरूषों के समान पुरी निपुणता से काम कर रही है। नौकरी ने उसे स्वयं की क्षमताओं को पहचानने में सहायता की है। यदि शिक्षा ने उड़ने के लिए पंख दिए हैं, तो नौकरी ने सपनों को साकार करने का मार्ग दिया है।

नौकरी ने उसकी कई तरह की समस्याओं को हल कर दिया है।नौकरी के कारण ही वह स्वाबलंबी है, घर की ज़िम्मेदारियों को संभाल रही है, अपने सपनों को पूरा कर रही है, अपने जीवन को एक नई दिशा दे रही है, घरवालों के साथ कंधे-से कंधा मिला रही है।